भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

उत्तिष्ठित जागृत

चेतना संदेश

(तैलिक समाज दिग्दर्शक)

14 करोड़, साहू राठौर समाज का मजबूत संगठन

चेतना संदेश ❑ सितम्बर, 2019 अंक-19 त्रैमासिक पत्रिका

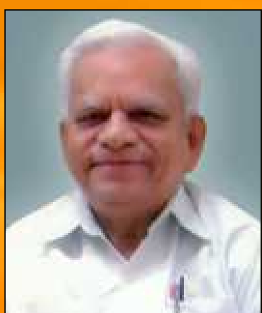

श्री राम नरायन साहू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
पूर्व सांसद, राज्य सभा

श्री रघुवर दास
मा0 मुख्यमंत्री
झारखण्ड

श्री रामेश्वर तेली
माननीय केन्द्रीय मंत्री
भारत सरकार

श्री ताम्रध्वज साहू
माननीय गृहमंत्री
छत्तीसगढ़, सरकार

राष्ट्र गौरव, भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री

समाज रत्न माननीय सांसद गण

श्री रामदास तडस
माननीय सासद
वर्धा, महाराष्ट्र

श्री पी0सी0 गद्दीगौदर
माननीय सासद
बागलकोट, कर्नाटका

श्री संगम लाल गुप्ता
माननीय सासद
प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

श्री अरूण साव
माननीय सासद
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

श्री चुन्नी लाल साहू
माननीय सासद
महासमुन्द्र, छत्तीसगढ़

श्री सुनील कुमार
माननीय सासद
सीतामढ़ी, बिहार

श्री टी.आर.वी.एस. रमेश
माननीय सासद
कुड़ालोर, तमिलनाडू

डा. ए.चेल्लाकुमार
माननीय सासद
कृष्णागिरी, तमिलनाडू

समाज की दशा एवं दिशा का व्यवहारिक आँकलन एवं मार्गदर्शक के रूप में रचनात्मक पहल।

E-mail : bhartiyatailikmahasabha@gmail.com
Website : www.tailik.org.

If undelivered please return to :
Shubham Theatre Building
Cantt. Road, Kaiserbagh, Lucknow-01
0522-2628182, 9451403835

SAHU GROUP OF COMPANIES

HAZRATGANJ, LUCKNOW Ph. 0522-4002233

Sahu Cinema - Hazratganj, Lucknow
Shubham Cinema- Kaisarbagh, Lucknow

Sahu Agencies- ▸ Raibarely Road ▸ Aliganj
▸ Hazratganj ▸ Sitapur Road
▸ Gomtinagar ▸ Alambagh
▸ Indira Nagar ▸ Saharaganj

☆☆☆
Gemini Continental - Hazratganj, Lucknow
☆☆☆☆☆
Renaissance Hotel - Gomti Nagar, Lucknow
DR Hotel ☆☆☆☆☆ - Gomti Nagar, Lucknow

Sahu Jewellers Pvt. Ltd - Hazratganj, Lucknow
Madhu Jewellers - Gomtinagar, Lucknow

Sunny Toyota -
▸ Shahnajaf Road, Lucknow
▸ Chinhat, Lucknow
▸ Amousi, Lucknow
▸ Agra, Kanpur, Sultanpur
▸ Faizabad, Etawa

▸ Kalpana Construction ▸ Sahu Landmark ▸ Sahu Colonizer
▸ Sahu Land Developers ▸ Sahu Housing etc.

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा (रजि0)

द्वारा प्रकाशित पत्रिका

चेतना संदेश

मुख्य संरक्षक,संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष :

गांधी रामनरायन साहू (पूर्व सांसद)

मोबाइल– 09695130007

संरक्षक मण्डल :

डॉ0उमेश शाहू
नागपुर– # 09422114433

श्रीमती मानसी साहू, एडवोकेट (सुप्रीमकोर्ट)
दिल्ली– # 09868149873

मेवा लाल साहू
ग्वालियर– # 08959136930

अरविंद गांधी, एडवोकेट
बलिया, उ.प्र. – # 09415813210

सुनील साहू
अमरावती, महा0 – # 09422855155

प्रवीण कारपोले गाण्डला तेली
हैदराबाद – # 09390100002

एस.गोकुल राज
त्रिपुरा, तमिलनाडू– # 09344698098

ललित राठौर
रूद्रपुर, उत्तराखण्ड – # 09690455226

एस. राहूल
नई दिल्ली, – # 09873524041

प्रधान सम्पादक :

जितेन्द्र माथुर
लखनऊ– # 09936241320

सम्पादक :

रमाशंकर साहू, एडवोकेट
लखनऊ– # 09451403835

सह–सम्पादक :

गांधी शिवसागर साहू
लखनऊ– # 09170139185

विधिक–सलाहकार :

मनोज साहू, एडवोकेट
लखनऊ– # 09450750386

परामर्शदाता समिति :

मोहनलाल गुप्ता
लखनऊ– # 09415576867

संगम लाल गुप्ता, सांसद
प्रतापगढ़ – # 9821876739

श्रीमती विजय लक्ष्मी साहू
फतेहपुर,(उ.प्र.) – # 07309155011

प्राक्कथन

विचारों का प्रभाव

जैसे विचार होते हैं, वैसा ही हमारा जीवन बनता है। संसार कल्पवृक्ष है, इसकी छाया तले बैठकर हम जो भी विचार करेंगे, वैसे ही परिणाम प्राप्त होगें। जो अपने आपको सद्‌विचारों से भरे रखते हैं वे पद–पद पर जीवन के महान वरदानों में विभूषित होते हैं। सफलता महानता, सुख, शान्ति, प्रसन्नता के पारितोषक उन्हें मिलते हैं। इसके विपरित जो अपने आपको हीन, अभागा बदनसीब समझते है, उनका जीवन भी दीन–हीन बन जाता है। विचारों से गिरे हुये व्यक्ति की तो परमात्मा भी नहीं उठा सकता। जो अंधकारमय निराशावादी विचार रखते हैं, उनका जीवन भी उन्नत और उत्कृष्ट नहीं बन सकता। मनुष्य को वही मिलता है, जैसे उसके विचार होते हैं।

विचार का बड़ा प्रभाव है। वे हमें उठा सकते है और गिरा भी देते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हमें आशावादी, उदार, दिव्य, पुरोगामी उत्कृष्ट विचारों से अपने मन को सरोबर रखना चाहिए। हीन और बुरे विचार से छुटकारा पाने के लिए उच्च और दिव्य विचारों का निरन्तर अभ्यास करना आवश्यक है।

बुरे विचारों को सद् विचारों से काटना चाहिए।

राम नरायन साहू
राष्ट्रीय अध्यक्ष / संस्थापक

प्रकाशक : भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा (रजि0)

कार्यालय :
शुभम थियेटर बिल्डिंग,कैण्ट रोड़, कैसरबाग लखनऊ–226001
फोन : 0522–2628182, वेब साईट : www.tailik.org.
ई–मेल : bhartiyatailikmahasabha@gmail.com

मुद्रक : एक्स्ट्रीम एडवारटाइजिंग, लखनऊ
फोन : 0522–4043571, मो. +919839075611

अंक- 19वाँ

सहयोग राशि : ₹ 25/-

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	हम समाज में उत्थान मे जुटें....	3
2.	सम्पादक की कलम सें.......	4
3.	राम नरायन साहू (भाषण राज्य सभा)....	5
4.	सामाजिक जाग्रुकता के महत्वपूर्ण अंग...	6–7
5.	जीवन एक प्रयोगशाला...	8
6.	जीवन की खुशिया ढूंढिए(स्वास्थ्य).	9
7.	जीवन का उद्देश्य...	10
8.	इच्छा शक्ति...	11
10.	सत्य, अच्छाई, व उपयोगिता...	13
11.	नारी सम्मान.....	15
12.	संगीत....	21
13.	आशा...	23
14.	सुरत नही सीरत ...	25
15.	Ganiga (Teli) Community in Karnataka State...	26
16.	समय परिवर्तन–सोच परिवर्तन...	27
17.	सरल पौष्टिक योग...	28
18.	साहू इतिहास के पृष्ठो में ...	29
19.	आर्थिक आधार पर आरक्षण से बंचित नागरिको से अपील...	30
20.	भारतीय नारी..	31
21.	व्यापार में सफलता के सूत्र...	33–34
22.	टहले और खुश रहें...	35–36
23.	कर्मवीर उमेश नन्दलाल शाहू...	37
24.	तैलिक वैश्य...	38
25.	दुनिया बदल सकते हैं गांधी जी के ये सिद्वांत ...	39
26.	स्विटरजरलैंड...	40
27.	माता–पिता को समर्पित...	41
28.	दिनांक–06.01.2019 को आयोजित साक्षात्कार का विवरण...	42–45
29.	शराब, गुटखा, तम्बाकू, पान मसाला, सिगरेट–बीड़ी के दुष्प्रभाव ...	46–47
30.	तैलिक समाज की उपजातियाँ कौन– कहाँ...	48
31.	क्यों टूट रहे हैं संयुक्त परिवार...	49
32.	सहयोगी सदस्यता स्वीकृति–पत्र...	50
33.	आदरणीय स्वजातीय बन्धु सादर नमस्कार !...	51
34.	समाचार पत्रों की सुर्खियाँ ...	52

पत्रिका में विज्ञापन दर

रंगीन पृष्ठ- 2 रू. 8,000/-, रंगीन पृष्ठ- 3 रू. 6000/- रंगीन पृष्ठ 4 रू. 10000/-
रंगीन पृष्ठ पत्रिका के अन्दर फुल पृष्ठ -रू. 3000/- आधा पृष्ठ- रू. 1500/-
पूरा पृष्ठ ब्लैक एण्ड व्हाइट रू. 1,500/-, आधा पृष्ठ रू. 800/-

हम समाज उत्थान में जुटें।

नियमित अभ्यास अथवा परिश्रम, चुनौती को स्वीकार करने की प्रबल इच्छा एवं भगवान कृपा का आश्रय लेकर व्यक्ति एक के बाद एक सफलता अर्जित कर अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में सफल हो जाता है। आदमी जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है। इसलिए वैसें सोचें जैसा बनना है। हर काली रात के बाद स्वर्णिम प्रभात अदित होता है। अतः सदैव उजाले की ओर देखें। यदि विचार ऊँचा हो तो और संकल्प शक्ति दृढ़ हो तो सफलता हमारे पीछे दौड़ी चली आयेगी।

ध्येय पथ पर आगे बढ़ने पर अनेकानेक बाधायें/प्रतिकूलतायें तो आती ही हैं पर उनसे हम हार मानकर बैठ जाना कायरता होगी। महापुरषों का कथन है कि प्रतिकूलतायें अभिशाप नहीं अपितु वरदान होती हैं। कठिनाइयाँ हमें समर्थ बनाती हैं और चुनौतियाँ लक्ष्य के प्रति सजग करती हैं। ध्रुव प्रहलाद आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। अब्राहम लिंकन अभावों और कठिनाइयों के बीच पल कर बढ़े हुऐ लेकिन अथक परिश्रम प्रबल इच्छा शक्ति और अदम्म साहस के बल पर राष्ट्रपति हुये। श्री नरेन्द्र मोदी का भी जीवन ऐसा ही प्रेरणा दायी उदाहरण प्रस्तुत करता है। सकारात्मक सोच के साथ लोक कल्याण और राष्ट्रहित में सर्वस्व समर्पण करने की धुन में वे बराबर लगे रहे। आज वे भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री बनकर देश की सेवा कर रहे हैं।हम भी ऐसी चुनौतियाँ स्वीकार करते हुये अपने समाज के उत्थान में जुटें। इसी कर्त्तव्य पालन में परिवार, समाज एवं देश का विकास सम्भव हो सकेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

–जितेन्द्र माथुर
प्रधान सम्पादक

विनम्र निवेदन

समाज के लिए पूर्णतः समर्पित पत्रिका चेतना संदेश में प्रकाशनार्थ साहित्य की सभी विधओं की श्रेष्ठ एवम अप्रकाशित रचनाएं आमंत्रित हैं।

1. रचना साफ-साफ हस्तलिखित हो टाइप की हुई हो। रचना के अन्त में पूरा पता व हस्ताक्षर होना आवश्यक है।

2. प्रकाशित रचनाओं में किसी भी प्रकार का मानदेय पारश्रमिक देना सम्भव नहीं है।

3. अपने क्षेत्र में होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों की सचित्र रिपोर्ट भी भेजे हम उन्हें सहर्ष स्वागत करते हैं।

4. पत्रिका आपसे सभी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रखती है आप स्वयं एवं समाज प्रेमी बंधुओं, एवं सम्बंधित संस्थाओं को इसके सहयोग के लिए प्रेरित करें।

5. रचना का स्वीकृत एवं अस्वीकृत करने का अधिकार सम्पादक मण्डल की बैठक में किया जायेगा।

6. प्रकाशित रचना में रचनाकार के स्वयं के विचार हैं इसमें सम्पादक एवं प्रकाशक की सहमत होना आवश्यक नहीं है।

7. किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र जनपद लखनऊ, उ.प्र. होगा।

-संपादक

सम्पादक की कलम से.........

''कैसे लिखूं महिमा सज्जातित्व की मुझसे लिखी नही जाती,
सन्देश सज्जातित्व का हर घर–घर है यह पहुंचाती।''

जब सच्ची श्रद्धा मन में जागती है तो भाव स्वयं मन में आ ही जाते हैं और कलम स्वयं ही चल जाती है। ठीक इसी तरह हमारे दैनिक जीवन में घटने वाली अनेकों घटनाओं में अनुकूल और प्रतिकूल परिणामों का जितना महत्व विचारों का होता है इतना किसी अन्य वस्तु का नहीं होता है। उन्नति और अवनति में भी विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विचारों में दृढ़ता एक से एक महत्वपूर्ण निर्णय कराने में सहायक सिद्ध होती है। चेतना संदेश त्रमासिक पत्रिका ने सज्जातित्व के विचारों को बड़े ही सुन्दर ढंग से संजोया है। सज्जातित्व और उसका विचार ही हमारी साहू राठौर महासभा की पहचान है। विचारों की शक्ति से बढ़कर संसार में दूसरा महत्वपूर्ण विकल्प नहीं है और न कभी भविष्य में होगा। विचारों की व्यापाकता से बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान आसानी से हो जाता है। हमारे साहू राठौर महासभा समाज में विचारों का अकूत भण्डार है। परन्तु उसमें सज्जातित्व का विचार विकसित करने में हितेच्छू सहायक सिद्ध हो रही है। सभी प्रकार के साधन सम्पन्न हाते हुए भी यदि विचार उच्चकोटि के नही हैं तो सारे साधन सम्पन्नता का कोई विशेष महत्व नहीं रह जाता है। परन्तु परिस्थितियां प्रतिकूल होते हुए भी यदि विचार उच्चकोटि के हैं तो प्रतिकूलता में भी अनुकूलता का पलड़ा भारी हो जाता है। कहने का तत्पर्य यह है कि अपने आप जैसा कुछ हम मानते है, वैसी ही मान्यता हमारे बारे में बन जाती है और जिन भावों और विचारों में संलग्न रहते हैं उसी में हम ढ़ल जाते हैं।

नये जमाने से जुड़े भविष्य और उसकी समस्याओं के समाधान के लक्ष्य को लेकर भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा आपके द्वारे सक्रिय रूप में खड़ी है और आपके बहुमूल्य सहयोग के लिये आपसे अपेक्षायें भी रखती है। अपने लक्ष्य की ओर निरंतर गतिशील 'चेतना संदेश' त्रमासिक प्रकाशन के लिए आर्थिक सहयोग की अपेक्षा भी आपसे रखती है। सहयोग के लिए आप आगे आयें और भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा को और मजबूत बनायें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

ये पत्रिका समाज को समार्पित करने से पहले हम सभी का दायित्व है कि पत्रिका में विचार सकारात्मक बदलाव के लिए है जब हम इस भावना से आगे बढ़ेगें तो आप देखेंगे कि हमारे विचार और सुदृढ समाज की परिकल्पनाप सकारात्मकता की तरफ बढ़ेगी।

–रमाशंकर साहू
एडवोकेट

राम नरायन साहू (भाषण राज्य सभा)

दिनाँक–07–07–2009

श्री राम नारायण साहू (उत्तर प्रदेश) महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय सदन के समक्ष पूर्व में भी तीव्रगति से गिरते भूमिगत जलस्तर पर चिंता व्यक्त कर चुका हूँ और आज पुनः करना चाहता हूँ कि सरकार इस समस्या की गंभीरता पर विचार नहीं कर रही है। महानगरों को उनकी आवश्यकता का 25 प्रतिशत जल ही उपलब्ध हो पा रहा है। साथ ही भूमिगत जलस्तर का तीव्रगति से गिरना समूचे प्राणी जगत के लिए विकराल समस्या का सूचक है। जलस्तर के पेड़ों की जड़ों की पहुँच से नीचे जाने कारण विशालकाय वृक्ष भी सूख रहे हैं। सरकार द्वारा लगाए गए पम्प दिनों–दिन जलविहीन होते जा रहे हैं। जलाशय, झीलें, तालाब, नदियां आदि सूख गये हैं या सूखने के कगार पर हैं। महोदय मेरा मानना है कि सरकार इस समस्या के प्रति गंभीर नहीं है अपितु योजनाएं भी कागजों पर सिमट कर रह जाती हैं।

इस समस्या पर राष्ट्रीय स्तर पर चिंतन, जागरूकता, नियोजन एवं क्रियान्वयन की त्वरित आवश्यकता है। मेरे गृह नगर लखनऊ में ही सरकार अरबों रूपया पत्थरों पर खर्च कर रही हैं। लेकिन पेय जल के नाम पर हैंडपम्प लगाने के लिए भी पैसा नहीं है। सरकार यह भूल गयी है कि पत्थरों से जीवन नहीं चलता बल्कि पानी से जीवन चलता है। मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि सरकार जल समस्या को गंभीरतापूर्वक समझे और पूर्ण समर्पण से इस कार्य को करें। सरकार सभी सम्भव श्रोतों को पुनर्जीवित करने, भूमिगत जल स्तर का संरक्षण करने, अनावश्यक जलदोहन पर प्रतिबंध एवं जनमत बनाने एवं भूमिगत जलस्तर को पुनः चार्ज करने हेतु ठोस कदम उठाए। सरकार इस कार्य में इतनी देर भी न करे कि कल देश को इस समस्या से आपदा से रूप में जूझना पड़े। भारत जैसे विशाल देश को बोतलों के पानी से जिंदा नहीं रखा जा सकता है। इसे हरा–भरा रखने के लिए नदी, नाले, तालाब, झरने, पोखर, जलाशय, जलमग्न होने आवश्यक हैं। जल के कार्य को कल का कार्य मत समझो, आज और अभी कुछ करना है। (समाप्त)

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश) महोदय, मैं इससे अपने आपको संबंद्ध करती हूँ।

श्री राम नारायण साहू (उत्तर प्रदेश) उपसभापति महोदय, पहले तो माननीय वित्त मंत्री जी को बधाई देना चाहूंगा कि उन्होनें ''नरेगा'' के लिए और पैसा उपलब्ध कराया है, लेकिन उसकी monitoring भी सही ढंग से होनी चाहिए और जिस हिसाब से पैसा दिया गया, उस हिसाब से लोगों के लिए काम भी निकाला जाना चाहिए। शिकायत यह है कि बहुत से लोगों को काम नहीं मिल रहा है और पूरे ढंग से काम नहीं हो रहा है। इसलिए मैं चाहूंगा कि उस रूपये का सही उपयोग हो और भारत की गरीब जनता को पूरा–पूरा काम मिले जिससे कि देश का विकास हो।

सर, दूसरी बात यह कहना चाहूँगा कि इस बजट में पुरानी बीमारी है, जो कि 13–14 राज्यों में फैली हुई है और आए दिन लोगों की जान जाने की घटनाएं हुआ करती हैं, लेकिन इस बारे में सरकार कोई कदम नहीं उठा रही है। इसकी रोकथाम पर गवर्नमेंट का रूपया भी बहुत खर्च होता है, लेकिन सरकार इस विषय में गंभीरतापूर्वक ध्यान नहीं दे रही है। इसलिए मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है इस समस्या की ओर विशेष ध्यान दे। महोदय, इस कारण यह भी है कि हमारे यहाँ इन राज्यों में गरीबी भी बहुत है। अगर गरीबी और अमीरी की खाई को पाटा नहीं गया तो यह नक्सलवाद दूसरे राज्यों में भी फैलता जाएगा।

–क्रमशः अगले अंक में

समाजिक जागरूकता के महत्वपूर्ण अंग नर और नारी

विष्णु पुराण में पुरूष और स्त्री अपने–अपने स्थान पर महन्ता का उल्लेख किया गया है। सत्य ही वर्णित है कि ''पुरूष विष्णु है, स्त्री लक्ष्मी/पुरूष विचार है, स्त्री रचना, पुरूष धैर्य है, स्त्री शांति, पुरूष प्रयत्न है, स्त्री इच्छा पुरूष धर्म है, सभी बुद्धि, पुरूष तर्क है, स्त्री रचना पुरूष दया है, स्त्री दान, पुरूष मंत्र है, स्त्री उच्चारण पुरूष अग्नि है, स्त्री ईधन पुरूष समुद्र है स्त्री किनारा पुरूष धनी है, स्त्री धन, पुरूष युद्ध है, स्त्री शांति, पुरूष दीपक है स्त्री प्रकाश, पुरूष दिन है, स्त्री रात्रि, पुरूष वृक्ष है, स्त्री फल पुरूष संगति है स्त्री स्वर, पुरूष न्याय है स्त्री सत्य पुरूष दंड है स्त्री पताका, पुरूष शक्ति है, स्त्री सौंदर्य पुरूष आत्मा है तो स्त्री शरीर है।

उपरोक्त रोमांचकारी जानकारी से हमें आहलित होना चाहिए। एक दूसरे के अस्तित्व की स्थिति। एक के अभाव में दूसरा कोई महत्व नहीं रखता। स्त्री–पुरूष की समान भूमिका का दर्शन वैदिक काल में बड़े ही व्यवस्थित रूप में था। पुरूषों की तरह स्त्रियाँ भी स्वतंत्र थी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भाग लेती थी। राजनीति समाज धर्म सभी में नारी का महत्वपूर्ण स्थान था। कोई भी कार्य नारी के अभाव में पूर्ण नहीं माना जाता था। शिक्षा संस्कृति में उनका समान अधिकार था। स्त्रियाँ यज्ञोपवीत धारण करती थी। यज्ञ वेदाध्ययन आदि में पूरा–पूरा भाग लेती थी। इसी समय लोपामुद्रा, घोषा, गार्गी, मैयेयी आदि वेदों की मं. त्र दृष्टा ब्रहावादिनी हुई।

इतना ही नहीं स्त्रियों को विशेष आदर–सम्मान का अधिकार देते हुये मनु भगवान ने लिखा है–

यंत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तब देवताः। अर्थात जिस कुल में स्त्रियों की पूजा होती है उस कुल पर देवता प्रसन्न होते हैं तथा जहाँ नारियों का सम्मान नहीं होता, उन्हें पूज्य भाव से नहीं देखा जाता, वहाँ सारे फल, क्रियायें नष्ट हो जाती है।

परन्तु परिस्थितियों के बदलते ही नारी जीवन की दुर्दशा शुरू हो गयी और कालान्तर में उसकी स्वतंत्रता, समानता, आदर के अधिकार उसमें छीनकर उसे घर की चारदीवारी, परदों में बंद कर दिया गया वहाँ आक्रमणों के काल में भारतीय नारी जीवन की भारी दुर्दशा हुई और नारी का गौरव, सम्मान अधिकार सब छीन लिये गये। नारी एक निर्जीव गुलाम की तरह पीड़ित की जाने लगी। उसका दमन होने लगा। नारी के परिवार में जो गृहलक्ष्मी गृहिणी का स्थान था, वहाँ उसे सास, ससुर, पति, देवर, ननद, जेठानी, के अत्याचारों का सामना करना पड़ा। पति के मर जाने के बाद उसे राक्षसी कुलटा दुराचारिणी आदि शब्दों से नवाजा जाने लगा। सती होने के नाम पर उसे जीवित ही ज्वाला में झोके जाने लगा। समाज में किसी व्यक्ति की देख को देख लेना बातचीत कर लेना उसके चरित्र का कलंक समझा जाने लगा। पुरूष ने साम, दाम, दंड, भेद, से मनचाहा नारी पर शासन किया, अत्याचार किये उस पर।

फलतः मानव जीवन का अर्द्धांग बेकार, हीन अयोग्य बन गया। आधे शरीर में लकवा दौड़ जाने पर सारे शरीर का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है, यहीं बात हमारे जीवन के साथ हुई। हमारे सामाजिक पतन का मुख्य कारण स्त्रियों की यह दुर्दशा भी स्त्री है।

राष्ट्र को विकास और स्वतंत्रता की नई प्रेरणा देने वाले महापुरूषों ने इस कमी को अनुभव किया और समाज को सशक्त सबल बनाने के लिए स्त्रियों के अधिकारों की नई परिभाषा की तथा उनके शोषण दुरावस्था, उत्पीड़न को बंद करके पुरूष के समान

अधिकार देने के लिए पूरा–पूरा प्रत्यन किया। राजा राम मोहन राम ने सती प्रथा के विरूद्ध आवाज उठाई। महार्षि दयानंद ने नारी के अधिकारों का व्यापक आंदोलन ही चलाया। स्वामी विवेकानंन्द ने समाज को चेतावनी दी। कि जिस देश जाति राष्ट्र में नारी की पूजा, सम्मान नहीं होगा, वह राष्ट्र कभी उन्नत और महान नहीं हो सकता। लाला लाजपत राय, महामना मदन मोहन मालवीय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर सरीखे समाज प्रणेताओं ने स्त्री दशा सुधारने के महत्वपूर्ण कार्य किये। मालवीय जी ने तो विधिवत् विद्धानों का सम्मेलन करके स्त्रियों के लिए यज्ञापवित्र वेदाध्ययन यज्ञ आदि सामाजिक कार्यों में पूर्ण अधिकारों की घोषणा की। भारतीय संविधान में लड़की को भी आर्थिक क्षेत्र में उत्तराधिकार तथा अत्याचार के विरूद्ध बोलने का अधिकार देकर नारी जाति की स्वतंत्रता, सुरक्षा विकास और समानता का प्रयत्न किया गया।

इन सभी प्रयत्नों के बावजूद अभी भारतीय नारी अपने लक्ष्य से बहुत पीछे है। पर्दा, प्रथा, दहेज, लड़के–लड़की में असमानता का भाव आदि कुछ कम अभिशाप नहीं है नारी के लिए। अभी भी भारतीय नारियाँ बहुत बड़ी संख्या में घर की चाहरदीवारी के अन्दर कैद हैं। उन्हें शील सदाचार आदि का बहाना लेकर परदे, बुर्का, आदि में बंद कर रखा है। जिस पौधें को पर्याप्त हवा, प्रकाश, नहीं मिलता वह मुरझा जाता है। अधिकांश स्त्रियों में भी विभिन्न प्रकार के रोग फैल रहे हैं। अभी भी स्त्री वासना दृष्टि का साधन समझा जाता है। एक स्त्री के मरने पर ही नहीं उसके जीवित रहते दूसरा विवाह किया जाता है। बड़े–बड़े नगरों शहरों में वैश्याओं के केन्द्र नारी जीवन की दुर्गति और समाज के कलंक के रूप में अब भी प्रकट अथवा अप्रकट रूप में स्थित है।

सुधार के विभिन्न प्रयत्नों के बावजूद भी यथार्थ की धरती पर भारतीय नारी का जीवन अभी भी बहुत बड़े क्षेत्र में अविकसित पड़ा है यह हमारे सामाजिक जीवन पुरूष के अद्धांर्गिनी की विकृति है जिसने सारी प्रगति को ही अवरूद्ध कर रखा है। अंधपरम्परा, अंधविश्वास, रूढ़िवादी, संकीर्णता, व्यर्थ के अभिमान को त्यागकर नारी को उसके उपयुक्त स्थान पर प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। इसी में हम सभी की उन्नति निहित है। नारी का उत्थान पुरूष का उत्थान है। नारी की प्रगति पुरूष की उन्नति है।

अंत में यही कहना यथोचित होगा कि दोनों का जीवन परस्पर आश्रित है।

जितेन्द्र माथुर
प्रधान सम्पादक

कामयाब व्यक्ति की सिर्फ चमक लोगों को दिखाई देती है, उसने कितने अंधेरे देखे है ये कोई नही जानता।

यदि सपने सच नही हो तो रास्ते बदलों सिद्धांत नहीं क्योकि पेड़ हमेशा पत्तियॉ बदलते है जड़े नही।

जीवन एक प्रयोगशाला

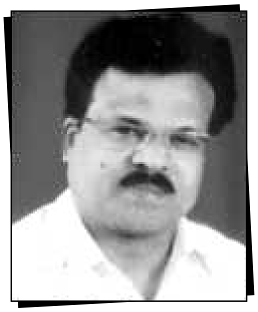

जीवन एक प्रयोगशाला के समान है। जो जितना अधिक प्रयोग सार्थक दिशा में करता जाता है वह उतना ही बड़ा अनुसंधान –कर्ता बनता जाता है। इसी तरह बातचीत और व्यवहार को भी जीवन की प्रयोगशाला में जरूर शोधन करना चाहिए इससे न जाने कितनी बंद दिशाएं और कपाट खुल जाते हैं। सबकी तरह नहीं, अपनी तरह अलग पहचान के साथ रहना, जीवन जीने की बेहतरीन कला है। अपनी मौलिकता और नवीनता को संजोए रखना भी इसमें शामिल है।

प्रकृति समाज और स्वाध्याय के जरिए इंसान हर पल कुछ न कुछ नया, मौलिक और सर्वोत्तम सीख सकता है। इसके लिए संवेदना और जिज्ञासा लगातार बनाए रखना चाहिए। सीखने के लिए न तो किसी शर्त, देश और खास तरह की वस्तु का होना जरूरी है और न ही किसी पाठशाला की। मन में हमेशा एक संकल्प दृढ़ करना चाहिए कि जो भी कुछ, जहाँ से भी उपयोगी आत्मसात करना है। इससे कई फायदे है। सबसे बड़ा फायदा है कि इससे आत्मविश्वास आत्मशक्ति, और आत्मज्ञान सुदृढ़ करने में मदद मिलती है। अर्जित किए गए किसी भी अनुभव व ज्ञान से बढ़कर जीवन में कोई भी चीज ऐसी नहीं जो इंसान को उसके लक्ष्य को प्राप्त कराने में नींव का पत्थर बने।

मेरे छात्र जीवन में एक ही सहपाठी था, जो इतनी मधुरता और सहजता के साथ बोलता था कि सुनकर मेरा मन कहता था काश, मैं भी इसकी तरह बोल पाता। वह उदार हृदय को लड़का था। सबसे बात करना, लोगों के बारे में जानकारी इकट्ठा करना और व्यक्ति तत्व के विकास के लिए अच्छी सलाह देना उसे अच्छा लगता था। आज भी जब मैं अपने छात्र जीवन की ओर निहारता हूँ तो उस सर्वथा नवीन और मौलिक बातचीत करने के ढंग वाले छात्र की कोशिश करता हूँ और रोमाचिंत होता रहता हूँ।

संवाद और व्यवहार की कुशलता व्यक्ति की संकीर्णता से निकालकर उदारता की ओर ले जाती है। व्यक्तित्व के चर्हुमुखी विकास का इससे 'उत्तम' तरीका दूसरा कोई नहीं है। दूसरों के प्रति सहानुभूति और संवेदना प्रकट करने और उसकी समस्याओं से एकाकार होने का इससे बढ़कर दूसरा कोई तरीका नहीं।

अगर तुम ठान लो, तो गगन के तारे तोड़ सकते हो।
अगर तुम ठान लो, तूफान का मुख मोड़ सकते हो।
अगर तुम ठान लो, विश्व के इतिहास में अपने,
सुयश का नया अध्याय जोड़ सकते हो।

डा0 उमेश नन्दलाल शाहू
राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष
नागपुर–महाराष्ट्र
मो0नं0–9422114433

कभी भी दुष्ट लोगों की सक्रियता समाज को बर्बाद नही करती, बल्कि हमेशा अच्छे लोगों की निष्क्रिता समाज को बर्बाद करती है।

श्री रामेश्वर तेली
केन्द्रीय राज्यमंत्री
श्री रामदास तड़स
सांसद, वर्धा (महाराष्ट्र)
श्री संगमलाल गुप्ता
सांसद, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
श्री चुन्नीलाल साहू
सांसद, महासमुंद (छत्तीसगढ़)
श्री सुनील कुमार पिन्टू
सांसद, सीतामढ़ी (बिहार)
श्री पी. सी. गद्दीगौदर
सांसद, बागलकोट (कर्नाटक)
श्री अरूण सांव
सांसद, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
प्रधान सेवक श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी
के जीवन के अनछुए पहलू
17 सितम्बर 2019, सायं 4 बजे
डी.डी.ए. पार्क रतिया मार्ग, संगम विहार
जन्मदिवस समारोह
मुख्य वक्ता
श्री प्रहलाद मोदी जी
समाज सेवी व प्रधानमंत्री के छोटे भाई
धारा 370 व 35 ए का खात्मा
3 तलाक से मुक्ति
सर्जिकल स्ट्राईक
एयर स्ट्राईक
बुलेट ट्रेन
मोदी है तो मुमकिन हैं।
युनिटी स्टैच्यू
राफेल
डोकलाम
नोट बंदी
जी एस टी
संगीत प्रस्तुति:-
सोनू साहू
प्रियंका सहवाल
एस राहुल
राष्ट्रीय प्रवक्ता व
प्रदेश अध्यक्ष दिल्ली
9873524041
दिल्ली प्रदेश साहू राठौर महासभा | कार्यालय : सी-85 सरिता विहार, नई दिल्ली- 110076

लखनऊ में मा0 राजनाथ सिंह जी के साथ श्री रामनरायन साहू।

नई दिल्ली मं केन्द्रीय रेलमंत्री से मुलाकात करते
उ.प्र. के प्रदेश अध्यक्ष श्री संगम लाल गुप्ता मा0 सांसद, प्रतापगढ़।

मेजर जनरल श्री सुभाष सरन जी द्वारा श्री राम नरायन साहू
पूर्व सांसद को प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया।

मा0 सांसद विलासपुर श्री अरूण साव को राष्ट्रीय अधिवेशन का
आमंत्रण पत्र देते संगठन के राष्ट्रीय पदाधिकारी।

मा0 सांसद मदासमन्द्र श्री चुन्नीलाल साहू को राष्ट्रीय अधिवेशन का
आमंत्रण–पत्र देते संगठन के राष्ट्रीय पदाधिकारी।

स्वास्थ्य

जीवन की खुशियां ढूंढिए

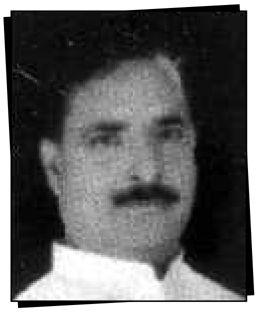

आजकल अधिकतर लोग अपने व्यक्तित्व, कैरियर व संबंधो को लेकर तनाव में रहते हैं। अक्सर लोगों की शिकायत होती है कि सबसे ज्यादा परेशानियां समस्याएं जिन्दगी ने उन्हे ही दी है। यहाँ पर जान लेना जरूरी है कि अपनी आलोचना से आपका मनोबल तो गिरता ही है, आपके अन्दर आत्महीनता भी विकसित होने लगती है।

देखा जाए तो आपके सोचने का तरीका आपके माहौल से प्रभावित होता है। विकास की प्रक्रिया आपके सोच को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है। पर इसके नकारात्मक प्रभाव से व्यक्तित्व की मुक्त कर पाना इतना मुश्किल नहीं है किसी भी क्षेत्र में सफलता अर्जित करने के लिए सबसे जरूरी है कि आप अपनी क्षमताओं सीमाओं को जाने और समझें। जीवन में आगे बढ़ने के लिए महत्वाकांक्षी होना जरूरी है, पर इसका यह मतलब नहीं है कि आपकी शत् प्रतिशत इच्छांए पूरी हो जाए। अति महत्वाकांक्षी होना आत्मघाती है। यदि कल्पना में रहने की आदत आप में है तो धीरे धीरे उसे छोड़ दीजिए। अपनी उपलब्धियों को छोटी–छोटी सफलताओ को महसूस करना एक ऐसी कला है जो मन को असीम संतुष्टि से भर देती है। यदि आप अपने वर्तमान से असंतुष्ट है तो आप तनाव से रहेगें। सदा तनाव में रहना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

यदि कोई व्यक्तितत्व पर नकारात्मक टिप्पणी करता है तो यह होगा कि उसे भूल जायें बेहतर तो यह होगा कि आप सिर्फ ऐसे लोगो से करीबी सम्बन्ध बनाएं जो आपकी खामियों के जिक्र के साथ निराश ही बनाएगा।

कोई भी बात मन में छू जाये, किसी की सराहना मधुर अहसास दे जाए तो उसे कहीं नोट कर लें। अपनी उपलब्धियों यादों और महत्वपूर्ण गुणों की डायरी में लिखे। अगली बार जब भी नकारात्मक या निराशावादी विचार आप पर हावी होने लगे तो डायरी पढ़िए। आप पांएगे कि तनाव कम हो रहा है। जब आपको यह अहसास हो कि आपके जीवन में अच्छी चीजें है और आपका ख्याल रखने वाले लोग भी है जो जीवन और भी आसान, सुखमय और सुंदर हो जाता है।

सुनील साहू
राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष
अमरावती, महाराष्ट्र
9422855155

मंजिलें मिल जायेगी,
भटकते ही सही
गुमराह तो वो है जो
घर से निकलते ही नही।

लक्ष्य न ओझल होने पाये
दृढ़ निश्चय पर रहे अटल।
सफलता कदम चुमेंगी आज
नही तो निश्चय कल।।

जीवन का उद्देश्य

हम सभी को अपने जीवन में एक विशेष लक्ष्य को निर्धारित करना बहुत जरूरी है। अगर हम लक्ष्यविहीन जीवन जीने की कल्पना करें ता हममे और पशुओं में कोई अंतर नहीं रह जायेगा। हमारे जीवन में कोई लक्ष्य ही नहीं होगा। तो हम यहाँ–वहाँ भटकते रह जायेंगे, लेकिन पहुँचगे कहीं नहीं। ऐसे में हर मनुष्य को अपना लक्ष्य तय करना ही चाहिए, क्योकि अगर हमारा कोई लक्ष्य होगा, तभी हमें मालूम होगा कि हमें किस देश में जाना है और हमारी मंजिल क्या है।

मनुष्य के जीवन में लक्ष्य अतिआवश्यक है। हालांकि सवाल यह है कि हमारा लक्ष्य क्या हो? लक्ष्य के बारे में ज्यादातर लोगों की यही धारणा रही है कि अत्यधिक धन दौलत, नाम, सम्मान, अर्जित करना जीवन की सार्थकता है। अनजाने में हम लोगों से यह गलती हो जाती है कि हम पैसा और भौतिक सुख पाने को ही अपना लक्ष्य बना लेते है। हालांकि भौतिक संपदा सुविधांए हैं, लेकिन यह हमारी मंजिल कदापि नहीं हो सकती। धन–दौलत एकत्र करना विवाह करके बच्चे पैदा करना और बच्चों का लालन–पालन करके मृत्यु को प्राप्त करना ही मानव जीवन का लक्ष्य नहीं है। यह सच है कि हमें अपना जीवन निर्वाह करने के लिए कुछ न कुछ कर्म करना होता है, लेकिन इसी को परम लक्ष्य मानने की भूल अक्सर मनुष्य से हो जाती है।

दरअसल दुनिया की चकाचौंध और माया–मोह में हम लोग ऐसे फंस जाते है कि अपनी वास्तविक एवं स्वाभाविक स्थिति को ही भूल बैठते हैं। हम अज्ञानता में निरंतर भौतिक सुखों की कामना करते हैं और इसे ही जीवन का परम लक्ष्य मान बैठते है। असल में जो लोग भौतिकता के प्रति आकर्षित ओर आध्यात्मिकता के प्रति बेपरवाह बने रहते है, वे अपने कार्यों की क्रिया–प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जन्म एवं मृत्यु के चक्र में बध जाते है। बहरहाल लाख कोशिशों के बावजूद उन्हें भौतिकतावादी जीवन से सच्ची खुशी नहीं मिलती और धरती से विदा होने के अंतिम क्षण तक उन्हें यहीं लगता है कि अभी कुछ छूट रहा है। सच यही है कि हमें जीवन भोग के लिए नहीं, बल्कि परमात्मा का अनुभव करने के लिए मिला है। हमारी आत्मा उस परमात्मा का अभिन्न अंश है, इसलिए आत्मा को जान लेना और उसके अनुसार जीवन को चलाना, यही हर मनुष्य के जीवन का वास्तविक लक्ष्य है।

कार्य करों ऐसे की पहिचान बन जाए।
हर कदम चलो ऐसा कि निशान बना जाए।
जिन्दगी तो हर कोइ काट लेता है मेरे दोस्त
जिन्दगी ऐसे जियों की निशान बन जाये।

–इंद्रजीत साहू
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
मो. 9415440349

इच्छा शक्ति

प्रत्येक व्यक्ति के भीतर शक्तियों को अकूत खजाना है। इन शक्तियों के माध्यम से जीवन की काया पलट सकता है। हमारे जीवन में विभिन्न तरह की परिस्थितियां आती रहती है। लेकिन उनसे हमारा हौसला डिगना नहीं चाहिए। जब व्यक्ति के भीतर कुछ करने की आकांक्षा उठती है। तब असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। सफलता का मूल बिंदू ही इच्छा शक्ति है। इसके दम पर व्यक्ति कुछ भी हासिल कर सकता है। प्रत्येक मानव दृढ़ इच्छाशक्ति से चरित्रशक्ति में निखार लाए और तेजस्विता को बढ़ाए। शंका दुख का कारण है। उसमें निषेधात्मक विचारों के सर्प रेंगते रहते है। व्यर्थ की शंकाएं केवल कुकल्पनाओं को जन्म देती है। एवं मैत्री के धागें को तोड़ती है। अक्सर देखने में आता है कि आज की भागदौड़ एवं तनाव जिन्दगी में लोग अपनी जिम्मेदारियों को भूल जाते है।

आप पर सिर्फ आपका ही अधिकार नहीं है, बल्कि आपके परिवार, समाज का और राष्ट्र का भी अधिकार है, क्योंकि आपके व्यक्तित्व के निर्माण में इनका भी हाथ है। इसलिए इसलिए आपकी इनके प्रति कुछ जिम्मेदारियां बनती है। इन जिम्मेदारियों का निर्वहन करने वाला व्यक्ति ही नया सृजन कर सकता है। जो लोग पद और प्रतिष्ठा पाकर अपनी जिम्मेदारी भूल जाते है या शक्ति का दुरूपयोग करते है वे बहुत शीघ्र पतन की खाई में भी गिरते नजर आते है। हमें रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता के लिए अपनी ही गलतियों से सीख लेनी होगी, क्योकि हमारी गलतियां ही हमारी असली शिक्षक है। गलतियों से सीख लेकर उनकी पुनरावृत्ति न करना ही विशिष्ट व्यक्तित्व की पहचान है।

भाग्य की प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में होती है कि वह पुरूषार्थ द्वारा अपने भाग्य की दिशा को घुमा सकता है। भाग्य के भरोसे रहने वाला कोई भी महान नहीं बनता। सफलता के द्वार पर दस्तक देने के लिए चलते रहो– चलते रहो– का सूत्र जीवन में आत्मसात करना होगा। जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है सही दृष्टिकोण। सही दृष्टिकोण व्यक्ति की सृजन चेतना को जगाता है। जब तक दृष्टि सही नहीं होती तब तक व्यवहार भी अच्छा नहीं हो सकता सही वस्तु को सही माने बिना सही दिशा का चुनाव भी नहीं हो सकता। दृष्टि को मिथ्या बनाए रखने वाले अनेक सीनों से पदच्युत व दिशाभ्रमित हो जाते है।

छत पर पहुंचने के लिए सीढ़ियॉ गिनना जरूरी नहीं उन पर चढ़ना भी होगा।

मेवालाल साहू
राष्ट्रीय अतिरिक्त महामंत्री
ग्वालियर –म0प्र0
मों0नं0–8959136930

किसी एक विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाओं कुविचारों का त्याग कर केवल उसी विचार के बारे मे सोचों तुम पाओगे की सफलता तुम्हारे कदम चुम रही है।
–स्वामी विवेकानन्द

चींटी से अच्छा कोई उपदेश नही देता आप वह सर्पन रहती है।

डा. वी.के.साहू
कन्सल्टेन्ट फिजिशियन

उदय साहू

मुकेश कु.साहू

डा. योगेन्द्र साहू
एम.बी.बी.एस.एम.डी.

माँ गायती हास्पिटल एवं ट्रामा सेन्टर

ISO 9001 : 2008 द्वारा प्रमाणित हास्पिटल

इमरजेन्सी सेवा 24 घण्टे उपलब्ध

माँ पार्वती डायग्नोस्टिक

आँकांक्षा मेडिकल स्टोर

उपलब्ध सेवायें

- अल्ट्रासाउन्ड, एक्सरे, पैथालॉजी, E.C.G. व समस्त प्रकार के टीकाकरण।
- शुगर, चेस्ट, पेट, लीवर, गुर्दे, पेशाब, ब्लड प्रेशर आदि का इलाज योग्य डाक्टरों द्वारा।
- आधुनिक विधियों द्वारा समस्त प्रकार के आपरेशन बिना चीरा टाँका दूरबीन विधि द्वारा एवं प्लास्टिक सर्जरी द्वारा ।
- महिलाओं से सम्बन्धित-प्रसव (डिलीवरी), बाँझपन, नसबन्दी, मल्टीलोड आदि की सुविधा व परिवार नियोजन सम्बन्धित जानकारियाँ।
- नवजात शिशुओं के लिये वारमर एवं फोटोथिरेपी (पीलिया कम करने की मशीन) की सुविधा उपलब्ध।
- न्योरो सर्जरी/यूरो सर्जरी/ प्लास्टिक सर्जरी/ नवजात बच्चों की सर्जरी ।

डा. वी. कुमार साहू, प्रबन्धक

वरिष्ठ समाज सेवी, नेता (भाजपा)

बी.-515 हंसपुरम, हमीरपुर मेन रोड़ नौबस्ता, कानपुर-208027

सम्पर्क करें

हास्पिटल : 9838001016, फैक्स - 0512-2626214

मो.9839931015, 9793192021

हेल्पलाइन न0.- 9235735427

ईमेल : maagayatrihospital515@gmail.com

गलती से इंसान बहुत कुछ सीख सकता है। बशर्ते कि वह इसके लिए तैयार रहो।

प्रेरक प्रसंग, सत्य, अच्छाई व उपयोगिता

महान दार्शनिक सुकरात से एक बार किसी परिचित ने कहा, 'मैने आपके मित्र के बारे में कुछ बातें सुनी है, जो मैं आपको बताना चाहता हूँ। सुनते ही सुकरात ने कहा, 'आपने कुछ बताने से पहले मैं तीन कसौटियों का परीक्षण' करना चाहता हूँ। इसमें पहली कसौटी सत्य कसौटी है। क्या जो बात मुझे आप बतायेगें, वह पूर्णतः सत्य है?परिचित ने कहा, 'मैने ऐसा सुना है।'

इस पर सुकरात ने कहा, 'इसका अर्थ है कि आप बात की सत्यता की प्रति पूरी तरह आश्वस्त नहीं है। चलिए, अब दूसरी कसौटी का प्रयोग करते हैं, जिसे मैं अच्छाई की कसौटी कहता हूँ। मेरे मित्र के बारे में आप जो भी बताते जा रहे है, क्या उसमें कोई अच्छी बात है?

'नहीं! परिचित ने कहा।

सुकरात ने कहा, 'इसका मतलब यह कि आप मुझे जो कुछ सुनाने वाले थे, उसमें कोई भलाई की बात नहीं है। आखिरी कसौटी है उपयोगिता की कसौटी। क्या आपकी बात मेरे किसी काम की है?'नहीं तो ऐसा नहीं हैं' परिचित ने असहज होते हुए कहा।

'जो बात आप मुझे बताने वाले थे, वह न तो सत्य है, न ही भली है और न ही मेरे काम की है, तो मैं उसे जानने में अपना कीमती समय क्यूं नष्ट करूं? सुकरात ने जवाब दिया।

कथासार : सत्य, अच्छाई और उपयोगिता की कसौटी पर कसकर निरर्थक बातों का सुनने में समय नष्ट करने से बचा जा सकता है।

एक सूत्र में बँध जाएगा सारा साहू समाज।
महासभा के सभी सदस्य कर रहे अथक प्रयास।।
उन्हें बस चाहिए आपका साथ सहयोग विश्वास।
बधाई के पात्र है वे सभी काम कर रहे है कुछ खास।।

मनोज साहू एडवोकेट
राष्ट्रीय परामर्शदाता
लखनऊ उ0प्र0
मो0नं0–9450750386

कविता

साहू राठौर समाज अब एक जुट है एक छत।
पहले हम सब बिखरे थे इधर–उधर यत्र–तत्र।।
किन्तु सच ही है कि प्रयास को मिलती है सफलता।
आज प्रेम, स्नेह और सौहार्द्र की पल्लवित हो रही है लता।
जागरूक हुए है हम आज धर्म व जाति के लिए।
तूफानों से नहीं बुझते अटूट विश्वास के लिए।।
सभी के सामूहिक प्रयास से समाज का नया रूप मिला
अहम अलगाव सब छूटे मन से, स्नेह का सुन्दर फूल खिला।
समाज के दायरे को चेतना सन्देश ने सीमित किया।
मिनटों में पता किसी का पा जाते आसान ए काम किया।
कौन, कहाँ रहता है अब तक थे हम अनजान।
अब अजनवी हर क्षेत्र में भी निकल आती पहिचान।।
महासभा का ए प्रयास, तारीफ के है काबिल।
बहुत–बहुत आभारी और शुक्रगुजार है हमारा दिल।।

–निधि राठौर

अच्छे विचार

इंसान जीवन में सब कुछ सीख लेता है। सिवाय इसके कि जिया कैसे जाय।

खाली बर्तन सबसे ज्यादा आवाज करते है।

उद्यम भी सफलता की कुंजी है। बिना उद्यम किए थाली की रोटी भी मुँह में नही आती।

समाज के सभी साथियों को हार्दिक बधाई एव शुभकामनाएँ।

➡ A SIYARAM GROUP OF COMPANY

➡ SIYA RAM MULTITRADE PVT. LTD.

➡ SIYARAM HOLIDAYS, HOUSING INVESTMENTS

ANKIT SAHU , Director

Address 365/369 Bharigwari Near
Dr. Mehta (N.D. Plaza), Kanpur Road, Lucknow
Mobile : +91 9336425616, 9628888616 email : Siyarammultitrade@gmail.com

नारी सम्मान

हमारे धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं देवता निवास करते है। यानी जिस स्थान, समाज एवं परिवार में नारी का आदर सम्मान होता है, उनसे देवता प्रसन्न रहते है और देव कृपा से वहाँ लोगों की सभी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पूर्ति होती है। इसके विपरीत, जहाँ नारी का तिरस्कार किया जाता है, वहाँ देव कृपा नहीं होती और दरिद्रता का वास होता है, इसलिए हर किसी को नारी का सम्मान करना चाहिए। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि किसी परिवार, समाज एवं राष्ट्र का भविष्य नारी पर ही निर्भर करता है। नारी (माँ) अपने बच्चे को इस तरह संस्कारित करती है कि वे बड़े होकर समाज परिवार और देश का नाम ऊँचा करें।

नारी भी पुरूषों के समान समाज का मजबूत आधार स्तंभ है। दोनो को एक बराबर महत्व दिया गया है, क्योंकि दोनों में से एक के बिना भी समाज का अस्तित्व संभव नहीं और न जीवन सहजता से व्यतीत हो सकता है। प्राचीन काल में नारी का महत्व नर से कही बढ़कर होता था। धीरे–धीरे हमारे समाज में विकृतियां आने लगी, जिससे नारी की दशा में कई अपूर्व परिवर्तन हुए। सम्मान और आदर के बजाय नारी का हर जगह अपमान होता चला गया और उसे भोग की वस्तु समझा जाने लगा।

वैसे ही विडंबना ही है कि हमारे समाज में नारी की स्थिति अत्यंत विरोधभासी रही है। एक ओर उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया तो दूसरी ओर उसे बेचारी और अबला भी कहा जाता है। हमारे कई उत्सव और त्योहार हमें नारी शक्ति का सम्मान करने की प्रेरणा देते हैं, लेकिन इसके बावजूद अनेक लोग अपनी माता, पत्नी, बेटी, बहन, बहू इत्यादि में अवगुण खोजकर उन्हें तिरस्कृत करते हैं। बीते कुछ वर्षों से स्थिति में कुछ सुधार जरूर हुआ है, लेकिन ऐसा पुरूषों की वजह से नहीं, बल्कि स्वयं नारी ने अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए शक्तियों का प्रदर्शन करके अपनी छवि में सुधार किया। नारी वर्तमान में नर के समकक्ष श्रेणी में आ गई है। आज नारी का लक्ष्मी के साथ अपने सामाजिक दायित्वों का निभाने के लिए बढ़–चढ़कर आगे आ रही है। अपनी उपलब्धियों से नारी ने यह साबित कर दिया है कि यदि उसे भी पुरूषों के बराबर मौके दिए जाएं तो वे शक्ति और क्षमता में किसी के कम नहीं हैं।

क्यों डरे जिन्दगी में क्या होगा।
हर वक्त क्यों सोचों कि बुरा होगा।
बढ़ते रहो मंजिल की तरफ।
गर कुछ न मिला तजुर्बा तो नया होगा।

मोहन लाल गुप्त
राष्ट्रीय सचिव लखनऊ
मो0नं0–9415576867

ऊँ साँई राम

एस.आर.गुप्ता
B.Pharma

समाज के सभी साथियों को हार्दिक बधाई एव शुभकामनाएँ।

साँई कृपा फार्मेसी

(अंग्रेजी दवाखाना)

उ
यूनाईटेड बैंक अ

य पर मिलती हैं।

मोबाइल : 9307820643

न्यूरो स्पाइनल क्लीनिक

उतरठिया, निकट युनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया एवं साँई कृपा फार्मेसी, रायबरेली रोड, लखनऊ

डा0 अनुपम कुमार सिंह

M.B.B.S, M.S, M.Ch.

भूतपूर्व सीनियर रेजिडेन्ट, न्यूरो सर्जरी विभाग, किंग जॉर्ज मेडिकल युनिर्वसिटी, लखनऊ।
भूतपूर्व कन्सलटेन्ट न्यूरो सर्जन, सहारा हास्पिटल, लखनऊ।
कन्सलटेन्ट न्यूरो सर्जन, सरदार पटेल इन्स्टीट्यूट एवं डा. ओ.पी चौधरी हॉस्पिटल
उतरठिया–रायबरेली रोड, लखनऊ

मरीज देखने का तथा समय

(सोमवार, बुधवार एवं शुक्रवार) प्रातः 11:00 बजे सें 2:00 बजे तक तथा सायं 6:00 बजे से 9:00 बजे तक
(मंगलवार, गुरूवार एवं शनिवार) प्रातः 08:00 बजे सें 10:00 बजे तक

निम्नलिखित समस्याओं हेतु सम्पर्क करें

•सिंर की चोट •रीढ़ की चोट तथा पैरालिसिस (लकवा) •सिंर की चोट कमर दर्द, पैरो में सुन्नपन झनझनाहट (सियाटिका–लम्बैगो) •गर्दन में दर्द हाथो में सुन्नपन झनझनाहट •हाथ पैरो में कमजोरी (सरवाइकल स्पान्डिलाइसिस–मायलोपैथी) •सिंर दर्द, (माइग्रेन) न्यूरोलजिया आदि •मिरगी के दौरे •सिंर चकराना (वरटाइगो) •दिमाग में खून की नस का फटना •दिमाग में खून का थक्का जमना •दिमाग तथा रीढ़ के ट्यूमर •दिमाग तथा रीढ़ की टी.बी •बच्चो में जन्मजात पीठ में गांठ (मेनिजोमायलोसील, इनसिफेलोसील) •दिमाग में पानी बढ़ना, सिर का आकार बढ़ना (हाइड्रोसिफैलस) •हाथ पैरो में कम्पन (पाराकिन्सोनिज़म राइठर्स क्रेम्प आदि) •दिमाग तथा रीढ़ के इन्फेक्शन, न्यूरोसिस्टीसरकोसिस आदि

मरीज दिखाने हेतू निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें। (प्रातः 8:00 बजे से सायं 8:00 बजे तक)
फोन : 9307820643, 7618072262

12th, Two Days National Conference

07-08 September, 2019 @ Nagpur Maharastra

Bharatiya Tailik Sahu Rathore Maha Sabha {Gandla/Teli}

Sabka Saath **Telangana State** Sabka Vikas

JAI HIND - JAI NAMO

Sabka Viswas

Shri. Narendra Modi ji
Prime Minister of India

Dr.Subhash Sharan
MAJOR GENERAL (ARMY)

Shri. Ram Narayan Sahu ji
National President BTSRMS

Amit Shah ji
Home Minister

Rajnath Sing ji
Defence Minister

Karnukar Reddy ji
TS BJP Leader

Ramdas Tadas
MP Maharastra

Sangam Lal Gupta
MP UP State

Rameswar Teli
Food Processing MoS

PC Gaddi Goudar Teli
MP Karnataka

Praveen Kumar Korpole Teli
Telangana State President
9390100002

Prahlad Modi Ji
Social Activist

Sushma Sahu ji
Ex.Member NCW

Somabhai Modi Ji
Social Activist

Tulasi Nath Gandla
BJP Leader
Kuppam

Vijay Gandla
TS Youth President

Kalal Srinivas Gandla
Telangana General Sec

समाज के सभी बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ

मोहनलाल गुप्ता, राष्ट्रीय सचिव

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

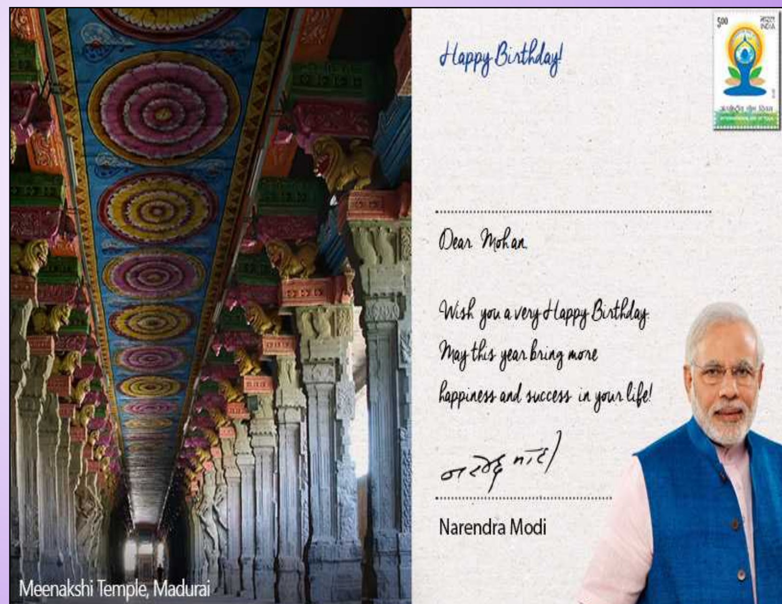

राजेश साहू

राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी, भारतीय तैलिक साहू महासभा

जिलाध्यक्ष-राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद,उ0प्र0

प्रचार मंत्री-आई.ई.टी. कर्मचारी एसोशिएशन, सीतापुर रोड़, लखनऊ, उ.प्र.

कार्यालयः बी-4, दारूलशफा, लखनऊ (उ.प्र.), मोबाइलः 9453973001

समाज सेवा के लिए संकल्प

लाल जी रामदेव गुप्ता (गाँधी)

प्रिय साथियों:–

1. राष्ट्रीय व राज्यस्तर के सभी पदाधिकारी अपने निवास क्षेत्र सीमा में कम से कम एक संगोष्ठी, सभा, चिन्तन शिविर व परिचय सम्मेलन आयोजित करें व राष्ट्रीय महासचिव को सूचित करें।
2. हर पदाधिकारी अपने क्षेत्र विशेष के किसी भी समाज संगठन में रहे परन्तु अपने पदस्थ राष्ट्रीय संस्था का संदर्भ बनाएं रखे, ताकि राष्ट्रीय पहचान बढ़े।
3. प्रयत्न करें कि 250 आमंत्रितों को मेला, पूजा, उत्सव, त्यौहार या प्रसंग पर बुलाए एवं माँ कर्मा की खिचड़ी प्रसाद स्वरूप भण्डारे में वितरित करें।
4. प्रत्येक सम्मेलन में महत्वपूर्ण रूप से शैक्षणिक, राजनैतिक व सामाजिक मुद्दों पर रायशुमारी व सन्मति बनाएं।
5. शिक्षित बेरोजगारों को नौकरी, व्यवसाय, रोजगार व सरकारी योजना की जो जानकारी उपलब्ध हो, उसके बारे में सविस्तार चर्चा करें।
6. स्थानीय समस्याओं को सूचीबद्ध कर मुख्य कार्यालय राष्ट्रीय अध्यक्ष को अवगत कराएं।
7. विधवा–विधुर विवाह को प्रोत्साहित करें यदि इच्छुक प्रार्थी हों, उनकी सारिणी बनाकर क्षेत्र विशेष में प्रसारित करें साथ ही विवाह योग्य बच्चों की सूची भी बनाएं।
8. उद्योगरत्, व्यापाररत्, नौकरीरत्, सरकारी नौकरीरत्, उच्च पढ़ाई जैसे वकील, सी.ए., इंजीनियरिंग की सारिणी बनाकर केन्द्रीय कार्यालय में भेजें।
9. राजनीति में इच्छा रखने वाले चुनाव लड़ना चाहे किसी भी पार्टी से या निर्दलीय, उनकी भी (सूची) सारिणी बनाकर भेजें।
10. किसी भी स्वजातीय संगठन को अपना ही समझ उसे सम्मान व आमंत्रण दें।
11. 1 से 3 माह में एक दिन समाज का दिन निश्चित करें व बैठक का प्रयास करें।
12. पूरे देश की राष्ट्रीय सूची व निर्देशिका बनाने में पूरा तन–मन व धन से साथ दें।
13. आपस में सहयोग राशि प्राप्त कर ऐसे आयोजन को सम्पन्न कराएं।
14. अपने क्षेत्र में उपलब्ध रिक्त पड़े कमरे/भूमि पर समाज का विद्या अध्ययन केन्द्र व सम्पर्क केन्द्र और भजन केन्द्र स्थापित करें, स्वपोषित व दान से इसे पूर्ण करने का प्रयास करें।
15. स्थानीय क्षेत्र में खेलकूद राष्ट्रीय दिवस आयोजन में सभी समाज के लोगों को साथ लेकर समाज का यश बनाएं व अन्य सामाजिक संगठन से तालमेल बढ़ाएं।
16. अच्छे गुणांक लाने वाले छात्र–छात्राओं का सम्मान करें, व सांस्कृति कार्यक्रमों में बच्चों की रूचि अनुसार छोटे–छोटे आयोजन करें।
17. राष्ट्र में, राज्य में सदस्य भ्रमण सम्पर्क यात्रा करें।
18. छोटा–बड़ा हर आयोजन, महत्वपूर्ण है और सामाजिक क्रान्ति का प्रतीक है व अपने सामर्थ्य का श्रेष्ठ समाज सेवा है, अतः हर आयोजन को सम्मान दें।
19. एक से अधिक किसी भी संस्थाओं में सदस्य बनना या पदाधिकारी बनना व्यक्ति के व्यक्तित्व की विशेषता व श्रेष्ठता है, चाहे वह स्थानीय स्तर की संस्था हो या राज्य या राष्ट्रीय स्तर की, भले ही वह पंजीकृत हो या प्रस्तावित हो।
20. पंजीकृत संस्थाएं जातिप्रमाण देने के लिए सक्षम व प्रशासकीय स्तर पर मान्य है।
21. समाज के किसी भी सदस्य को छोटा, गरीब या महत्वहीन न समझें क्योंकि हर बीज में एक वटवृक्ष छिपा है।
22. आपसी विवाद को परखकर व भविष्य के सुखद

आप सभी समाज बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनाएें।

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा
उत्तिष्ठित जागृत

राष्ट्र गौरव

झारखण्ड गौरव

समाज गौरव

विजय लक्ष्मी साहू

महिला प्रदेश अध्यक्ष- भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा,उ0प्र0
प्रदेश मंत्री महिला मोर्चा : भारतीय जनता पार्टी, उ0प्र0
निवास- सिविल लाईन्स 739, लक्ष्मी कालोनी, जिला अधिकारी आवास के सामने, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश
मो0 : 7309155011, 7007507152
e-mail : vijaylaxmisahu95@gmail.com

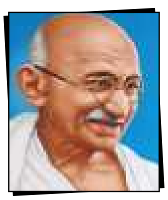

ALL INDIA O.B.C.'S RAILWAY EMPLOYEES ASSOCIATION

North Zone, Workshop Division, Northern Railway
Recognised by : Ministry of Railways, Govt. of India
Affiliated with- All India Other Backward Classes Railway Employees Federation

Finance Secretary :
Sahu Rathore Jankalyan
Samiti

HIRA LAL GUPTA
Ex. Div. Secretary
568K/67, Krishna Palli
Alambagh, Lucknow-226005
Mobile : 09415464619

संकल्प की कल्पना के लिए समाज की विछावन पर समान स्तर पर आसान ग्रहण करें।

23. बारात में अपने रिश्तेदारों सहित अधिकतम 60 (साठ) सदस्यों को ही ले जाएं व बहू भोज में आडम्बर रहित सामर्थ्यानुसार खर्च कर सकते हैं।
24. श्राद्ध भोज का आयोजन लघु करें एवं उसकी जगह श्रंद्धाजलि सभा अनिवार्य करें। जिसमें जलपान सेवा ही रखें।
25. हर व्यक्ति का सुझाव व सहयोग ही सर्वसम्मत राय में परिवर्तित होती है। अतः सुझाव आमंत्रित करें।
26. ईर्ष्या रहित, बिना बोले समाज की एकता के लिए चुनाव में अपना वोट समाज के व्यक्ति को प्राथमिकता पर दें व मदद, दान देकर समाज की प्रतिष्ठा बढ़ाएं।
27. दूरभाष सम्पर्क ध्वनि तरंगों से होता है, उसी तरह हमारा व्यक्त विचार, संकल्प, भजन व्योम में सदा तिरोहित रहता है, अतः प्रतिदिन अपने इष्ट देवी देवता, माता–पिता परिवार व राष्ट्र व समाज की कल्याण की भक्ति के शब्द कहें व कल्याण करें।
28. राजनीति चातुर्य से नियंत्रित होती है परन्तु समाज चरित्र से कीर्तिमान बनाती है।
29. समाज का आदर्श धन नहीं, धर्म हो, आयोजन का आदर्श कामना नहीं, कर्म हो।
30. आयोजन के लिए धन चाहिए– धनी नहीं, मन चाहिए मानी नहीं, तन चाहिए– तानी नहीं दान देने वाला व्यक्ति धनी से ऊँचा, दान दाता सेठ जी का गौरव पाता है। भामाशाह कहलाता है।
31. नारी को केवल शिक्षित ही न करें बल्कि प्रशिक्षित भी करें। जीवन के हर क्षेत्र राजनीति, आर्थिक सामाजिक क्षेत्र में ताकि माँ कर्मा देवी के आदर्श को प्रस्तुत कर सके सन्त जगनाडे महाराज का पुनरागमन कर सकें।

लालजी गुप्ता
मुम्बई

लघु प्रेरक कहानियाँ

1– एक बार विवेकानन्द जी विदेश गये। वहाँ उनको देखकर लोग हंसने लगे। विवेकानन्द ने उन्हें हंसते हुये देखकर कहा हमारी संस्कृति आपके देश की संस्कृति और सभ्यता से अलग है। आपके देश में दर्जी पोशाक बनाता है और आप पोशाक से सभ्यता की परख करते है परन्तु हमारे देश में ज्ञान और त्याग से सभ्यता की परख होती है।

2– ईसामसीह केपर नाम के नगर में पहुंचे। वे दुष्ट–दुराचारियों के मुहल्ले में ठहरे और वहीं रहना भी शुरू कर दिया। नगर के प्रतिष्ठित लोग ईसा के दर्शन करने पहुंचे तो उन्होनें आश्चर्य से पूछा कि इतने बड़े नगर में आपको सज्जनो के साथ रहने की जगह न मिली या आपने उनके बीच रहना पसन्द नहीं किया। हंसते हुये ईसा ने कहा कि वैद्य मरीजों को देखने जाता है या चंगे लोगों को। ईश्वर का पुत्र पीड़ितों और पतितों की सेवा के लिये आया है, उसका स्थान उन्हीं के बीच तो होगा।

ईसामसीह पीड़ित और दुखी व्यक्तियों की सेवा में सदैव सुख और आनन्द अनुभव करते थे।

3– राजा दिलीप के कोई संतान न थी। वह उपाय पूछने गुरू वशिष्ठ के आश्रम में पहुंचे। श्रृषि ने कहा कि आप यहाँ प्राकृतिक वातावरण में रहिये, दुग्ध पीजिये और गायों को चराने के निमित्त आप दोनों उसके पीछे–पीछे दिन भर भ्रमण कीजिए। राजा–रानी इसी काम को करने लगे। एक दिन मायावी शेर ने उनकी गुरूभक्ति को परखना चाहा और गाय के ऊपर आक्रमण कर दिया। राजा का धनुष–बाण काम नहीं रहा था तो उन्होनें मायावी शेर से कहा कि भले ही आप मुझे खा लें लेकिन इस गाय को छोड़ दें। गुरूजी की गाय को गंवाकर मैं अपने गुरू को क्या मुंह दिखाऊँगा।

राजा की भक्ति भावना और उत्तरदायित्व दृढ़ता की परीक्षा करके शेर ने गाय को छोड़ दिया और उन्हें भी नहीं खाया। समयानुसार राजा दिलीप को तप–साधना एवं कर्तव्यनिष्ठा के फलस्वरूप श्रेष्ठ संतान उपलब्ध हुई जिसने आगे चलकर रघुकुल परम्परा को चलाया।

रचना साहू
राजाजीपुरम, लखनऊ

समाज के सभी साथियों को हार्दिक बधाई एव शुभकामनाएँ।

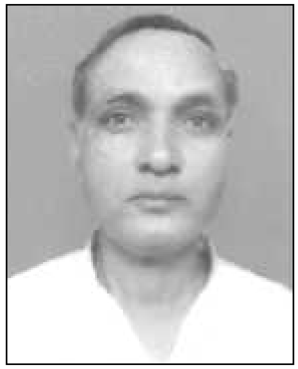

मेसर्स -एम॰ आर॰ उधोग

जमुनीपुर, अम्बेडकरनगर, (उ.प्र)

(उच्च कोटि के चावल निर्माता एवं एक्सपोर्टर)

साहू चावल उद्योग

जमुनीपुर, मरैला,अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

साहू धर्म काँटा

मरैला, अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

एम॰आर॰ धर्म काँटा

जगदीशपुर, अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

मो॰ 9415169191, 9621521011

प्रोपाराइटर – राजमणि साहू

प्रदेश उपाध्यक्ष–भारतीय तैलिक साहू राठौर (महासभा) उ.प्र.

अध्यक्ष–समाजवादी व्यापार सभा अम्बेडकर नगर, उ.प्र.

निवास:– जमुनीपुर बाजार अकबरपुर, अम्बेडकर नगर (उ.प्र.) 224122

संगति

सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य को किसी न किसी के साथ की आवश्यकता जरूर होती है और यही संगति उसके व्यक्तित्व निर्माण का प्रभावित करती है। संगति का प्रत्येक मनुष्य के जीवन में गहरा प्रभाव पड़ता है। अच्छी संगति से जहाँ व्यक्ति यश एवं कीर्ति कमाता है, वहीं बुरी संगति उसके पतन का कारण बनाती है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता उसकी संगति से ही चल जाता है। कहते भी है कि किसी व्यक्ति का आचरण जान लो। यानी जिस व्यक्ति के मित्र अच्छे आचरण वाले होगे। वह वैसे ही आचरण को आत्मसात करेगा। इसी तरह जिस व्यक्ति के दोस्त दुष्ट एवं दुराचारी होंगे, वह निश्चित रूप से वैसा ही करेगा।

कोई भी इंसान अपनी संगति से ही जाना पहचाना जाता है। व्यक्ति पर संगति पर असर जाने अनजाने में पड़ ही जाता है। ऐसे में प्रत्येक मनुष्य का विवेक प्राप्त करने के लिए संगति को अपनाना चाहिए। यदि उसे अच्छे संस्कार और स्वच्छ परिवेश मिलता है तो वह कल्याण के मार्ग पर चलता है। यदि वह दूषित वातावरण में रहता है तो उसके कार्य भी उससे प्रभावित हो जाते है। ऐसे में व्यक्ति को अपनी इच्छा कामना को नियंत्रण में रखने के लिए अपनी संगति सुधारनी चाहिए। यदि मनुष्य अपनी संगति सुधार ले तो उसका जीवन सुधर जाएगा। संगति व्यक्ति को सदैव सद्कर्म एवं विकास के लिए प्रेरित करती और समाज में उच्च्य स्तर प्रदान करती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संगति व्यक्ति को स्वाभिमानी और उसे कठिन परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करने की शाक्ति प्रदान करती है।

मनुष्य को अपने मन में कामना–लालसा का बीज पनपने से पूर्व की संतो एवं विद्वानों की शरण ले लेनी चाहिए, क्योंकि जैसी उसकी संगति होगी, वह वैसा ही चिंतन करना शुरू कर देता है। संत कबीरदास कहते है कि वह तन मानो पक्षी हो गया है, मन इसे जहाँ चाहे उड़ा ले जाता है। जिसे संग मिलता है, संगति या कुसंगति वह वैसा ही फल भोगता हैं मतलब यह कि हमारा मन ही अच्छी या बुरी संगति का असर इस तरह होता है कि सज्जनों की संगति से दुर्जन भी सज्जन बन जाता है। यानी व्यक्ति योगी के साथ योगी और भोगी के साथ भोगी बन जाता है।

आप भटकते हुए का सहारा बने।
डूबते साथियों का किनारा बने।।
दृढ़ विश्वास हो तो पहाड़, पत्थर भी हिल सकते है
शुद्ध भाव हो तो परवर दिगार भी मिल सकते है।।

नरेन्द्र साहू
प्रदेश अध्यक्ष (म.प्र.)
भोपाल)
मो0नं0–7974759566

योग्य वर–वधु के लिए सम्पर्क करें

पूर्णिमा साहू
पताः
538कए / 98, त्रिवेणी नगर
लखनऊ–226020
मो0 7668533339

G.P. Gupta
+91 9198111166
+91 9956816207

Product Range

Masala Tea | Cardamom Tea | Ginger Tea | Ginger Tea | Cardamom Masala Tea
Diet Tea | Lemon Tea | Cappuccino Coffee | Choca Melt
Cofee | Green Tea | Saffron Tea

OM SAI Enterprises

Authorised Dealer : Tea-Coffee Vending Machines, Instant Tea & Cofee Premixes

Patel Nagar, Neelmatha, Deepti Ganj Railway Crosing, Cantt, Lucknow (U.P.) 226002
E-mail : omsaienterprises112@gmail.com Web : www.sensofoods.com

समस्त साहू रैठौर समाज को पत्रिका प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाऐं

आनन्द साहू

प्रदेश उपाध्यक्ष

भा. तै. साहू राठौर महासभा उ.प्र.
विधानसभा प्रभारी बिथरीचैनपुर
भा.ज.पा.ओ.बी.सी.मोर्चा, बरेली
सदर कैन्ट, बरेली, डवइरू. 9319774787

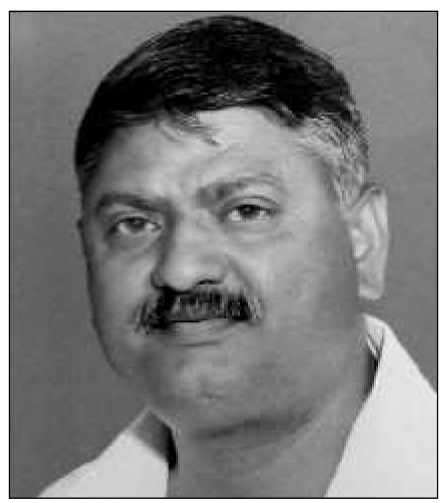

कामयाब होने के लिए एक बात सदा याद रहे, कि कभी भी हार नहीं माननी चाहिए।

आशा

आशा ही जीवन है, निराशा ही मृत्यु है। आशा मनुष्य के जीवन में शक्ति का संचार करती है, जबकि निराशा उसे पतन की ओर से ले जाती है। आशा मनुष्य का शुभ संकल्प है। आशा ही मनुष्य में यह विश्वास जगाती है कि इस धरा पर उसका भी अस्तित्व है और वह चाहे तो बहुत कुछ नया कर सकता है। मनुष्य परिस्थितियों का गुलाम नहीं होता, वह अपनी किस्मत खुद तय कर सकता है, लेकिन ऐसा तभी संभव है, जब वह आशावादी होगा। आशावादी व्यक्ति अपनी क्षमता और कमजोरियों को ध्यान में रखते हुए ही अपनी लक्ष्य तय करता है उसे यह भान होता है कि राह में जटिल हालात से उसका मुकाबला जरूर होगा, इसलिए वह विपरीत परिस्थितियॉ में कभी विचलित नहीं होता।

बाकायदा व आवश्यक साधन जुटाकर अपनी लगन एवं मेहनत से विपरीत परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करता है और मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियॉ भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाती। आखिर में सफलता उसके कदम चूमती है। यह आशा का ही कमाल है कि मनुष्य बड़ी–बड़ी मुसीबतों को हंसते–हंसते जीत लेता है। आशावादी दृष्टिकोण मनुष्य की क्षमता और दक्षता को बढ़ाता है और इससे सफलता उसके और करीब आ जाती है। जहाँ आशा ही नहीं वहाँ प्रयत्न कैसे हो सकता है और जब कोई प्रयास ही नहीं होगा तो फिर सफलता मिलनी असंभव है। आशावादी व्यक्ति किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता, बल्कि वह दूसरों को नई जिंदगी देता है।

जीवन का आंनद संघर्षों से लड़कर जीने में है और मनुष्य आशावादी होकर ही संघर्ष कर सकता है। आशा ही उसे सफलता, सुख एवं आनंद सब कुछ दिलाती है। इसके विपरीत निराश व्यक्ति जीवन में उदासीन और विरक्त होने लगता है। उसे अपने चारो तरफ अंधकार नजर आता है। निराश व्यक्ति कोशिश करने से पहले ही अपने को हारा हुआ मान लेता है और उसे अपना सबकुछ खत्म होता नजर आता है। निराश व्यक्ति व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक क्षमता भी घटती जाती है, जिस वजह से भी सफलता उससे दूर भागती जाती है। हमें निराशा का विनाश करके आशा को अपना धर्म बनाना चाहिए। अपने जीवन उद्देश्य को हासिल करने के लिए हमें सबसे पहले आर्शीवाद का सहारा लेना चाहिए।

सपनो के मिठाई से किसका पेट भरा है।
पत्थर की नाव पर बैठकर कौन तरा है।।
तेल तिल से निकलता है दोस्तों रेत से नहीं।
बिना श्रम के कब किसका जीवन निखरा है।

संगम लाल गुप्ता
प्रदेश अध्यक्ष/सांसद
प्रतापगण, उ0प्र0

समाज के सभी साथियों को
हार्दिक बधाई एव शुभकामनाएँ।

मनोज साहू

एडवोकेट, हाईकोर्ट, लखनऊ
राष्ट्रीय सलाहकार
भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

मुफ्त कानूनी सलाह हेतु सम्पर्क करें।

मोबाइल : 09450750386

समाज के सभी साथियों को हार्दिक बधाई एव शुभकामनाएँ।

राष्ट्र गौरव

झारखण्ड गौरव

समाज गौरव

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा
उत्तिष्ठित जागृत

ओम प्रकाश साहू

प्रदेश कोषाध्यक्ष

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

कार्यालय : शुभम थियेटर बिल्डिंग कैण्ट रोड़, कैसरबाग, लखनऊ

दूरभाष : +91 09335118647

निवास : विजय नगर, नीलमथा, बाजार, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

कोई भी व्यक्ति कभी पूर्ण नहीं होता, और कोई भी हर समय नहीं जीतता।

सूरत नहीं, सीरत

एक बाग में बहुत से पेड़—पौधे थे। वसंत की एक सुबह गुलाब के पौधे पर फूल खिला। हर किसी ने उसकी खूबसूरती की तारीफ की। गुलाब ने इठलाकर कहा, 'मानो या न मानो, मैं इस संसार का सबसे सुंदर फूल हूँ। मेरी पड़ोसन काटों से भरी नागफनी को देखो, कितनी भद्दी लगती है।' गुलाब का यह घमंड दूसरों का बुरा लगा। पीपल ने कहा, 'गुलाब, इस सुंदर फूल के नीचे तुम भी कांटों से भरे हो, इसलिए नागफनी का अपमान करना तुम्हें शोभा नहीं देता।' गुलाब ने तीखे स्वर में कहा, 'पीपल, तुम तो मूर्ख ही निकले। कांटों के कारण मेरी तुलना इस नागफनी से करते हो। तुमने उम्र ही बढ़ाई, ज्ञान नही बढ़ाया।

इस विवाद से नागफनी खामोश ही रही, लेकिन हर कोई गुलाब को कोस रहा था। लेकिन गुलाब का घमंड था कि बढ़ता जाता। वह हर रोज नागफनी से कहता, 'न रंग, न सुगंध, बस कांटे ही कांटे। मुझे खेद है कि तुम मेरी पड़ोसी हो।''

जल्द ही वसंत बीत गया और गर्मियां शुरू हो गई। गुलाब के फूल झड़ गए। हर तरफ पानी के लिए हाहाकार मच गया। पेड़—पौधे मुरझाने लगे। गुलाब के लिए भी जिन्दा रहना मुश्किल हो गया। तभी एक दिन एक चिड़िया आई। उसने नागफनी के तने में चोंच मारी और पानी पीकर उड़ गई। यह देखकर गुलाब को हैरानी हुई। उसने पूछा, 'क्या इससे नागफनी को दर्द नहीं होता?' जवाब पीपल ने दिया होता है, लेकिन दूसरों के कष्ट दूर करने क लिए नागफनी इसे चुपचाप सह लेती है।' गुलाब ने पूछा, तो क्या मुझे भी पानी मिल सकता हैं?' पीपल ने कहा, 'जरूर नागफनी तो हर किसी की मदद करने के लिए तैयार रहती है, लेकिन तुम्हें इस काम में चिड़िया की मदद लेनी होगी।' गुलाब ने चिड़िया से मदद मांगी और चिड़ियॉ ने नागफनी से पानी लाकर गुलाब को सींच दिया। तब गुलाब को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसकी समझ में आ गया कि बाहरी खूबसूरती बहुत सतही होती है असली सुंदरता सूरत में नहीं, सीरत में होती है। जैसी हीनहार होती है वैसी ही बुद्धि हो जाती है, उद्योग—धंधा भी वैसा ही हो जाता है और सहायक भी वैसे ही मिल जाते हैं अर्थात भाग्य में जो लिखा है, वही होता है।

विजय लक्ष्मी साहू
महिला प्रदेश अध्यक्ष
फतेहपुर
मो0 7007507152

~~~

अनुशासन किसी पर ऊपर से थोपा नही जाता अपितु आत्म अनुशासन लाया जाता है।
~~~

History, Present and future of "Ganiga (Teli) Community in Karnataka State"

As other parts of the country history of Ganiga Community in Karnataka dates back ot centuries, our forefathers continued their oil pressing cottage industry till recently. Because of mechanization and industrialisation the oil pressing cottage industry could not complete with modern age and gradually about to vanish. Still our people are struggling to continue the age old profession, but situation made them to quit the oil pressing profession to find some other jobs for their livelihood.

Majority Ganiga Community has switched over to other professions like trading, agriculture, daily wages labour, only few have recognisable social, economical educational and political status,

Akhil Bharat Ganiga Sangh organization has established in 1995, since then awareness among the community has improved and now the present scenario has changed lot, providing education to children has brought to top priority. At the same time reservation under 2A category in Kamataka state and OBC category in central Government, Community has benefited by this and made few of them as Doctors, Engineers, State Cadre KAS officers, IAS, IPS officers. Political awareness has gradually picking up, Ganiga Community is having only 2 MLAs and one MP in Kamataka State at Present.

During recent parliamentary election (2019) Ganiga Community has whole heartedly supported Narendrabai Modiji to elect him again as Prime Minister, the dream has came true. Ganiga Community will be with Narendrabai Modiji forever because, it need of the hour.

In Karnataka State Ganiga Community is recognized by many names i.e. Ganiga, Sajjan, Teli, Gandla, Jyoti, Kallashetty, Jyoti Nagar, Jyoti Nagar Vaishya. In Karnataka Ganiga Community population is about 50 Laks, Distributed all over Karnataka, mainly being Hindus, they follow local religious and cultural systems.

Recently we have joined hands with National Organisation Bhatiya Talik Sahu Rathore Mahasabha, to build strength and harmony of Ganiga (Teli) Community all over India.

15 Core people of Ganiga (Teli) Community of India shall join under single umbrella for development of our community as well as India, as a whole,

Jai Ganiga- Jai Namo

Dr. Shekhar D. Sajjanar MBBS., MS
President, Akhil Bharath Ganiga Sangh
Hubli-Karmataka, Former Karnataka State
Information Commissioner, Gadag, Bangalore
Cell : 09986516343

मुम्बई के कार्यक्रम में सम्मानित मंच श्री उमेश साहू, सतीश गांधी , रतीलाल गुप्ता, श्री नारायण साहू, रमाशंकर साहू, कैलाश अनूप साहू।

सुल्तानपुर के कार्यक्रम मे मा0 राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामनारायन साहू एवं जनकी प्रसाद साहू।

फतेहपुर जिला सम्मेलन में मा0 रामनरायन साहू, पूर्व सांसद को सम्मानित करती विजय लक्ष्मी साहू , महिला प्रदेश अध्यक्ष।

फतेहपुर जिला सम्मेलन में मंच से सम्बोधित करते श्री संगम लाल गुप्ता, मा0 सांसद, प्रतापगढ़।

मा0 सांसद श्री संगम लाल गुप्ता को बधाई देते श्री मनोज साहू, एडवोकेट एवं परामर्शदाता।

प्रदेश अध्यक्ष एस. राहुल के कुशल नेतृत्व में
दिल्ली प्रदेश साहू राठौर महासभा बढ़ते कदम

उप राष्ट्रपति श्री वेंकैया नाएडू जी के साथ
एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी जी के साथ
एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

केन्द्रीय मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद जी के साथ
एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

केन्द्रीय मंत्री श्री पियूष गोयल जी के साथ
एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री नित्यानन्द राय जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री रामेश्वर तेली जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री अनुराग ठाकुर जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा श्री श्याम जाजू जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा श्री दुष्यंत गौतम जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा श्री भूपेन्द्र यादव जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा डॉ. अनिल जैन जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा श्री अरूण सिंह जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

राष्ट्रीय मंत्री भाजपा श्री तरूण चुग जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

प्रदेश अध्यक्ष भाजपा श्री मनोज तिवारी जी
के साथ कैंडल मार्च में एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

दक्षिणी दिल्ली सांसद श्री रमेश बिधूड़ी जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

पूर्वी दिल्ली सांसद श्री गौतम गंभीर जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

उ.प्र. प्रतापगढ़ सांसद श्री संगम लाल गुप्ता जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

महाराष्ट्र वर्धा सांसद श्री रामदास तडस जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

उ.प्र. प्रयागराज सांसद डॉ.रीता बहुगुणा जोशी जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

बिहार सीतामढ़ी सांसद श्री सुनील कुमार पिंटू जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

छत्तीसगढ़ विलासपुर सांसद श्री अरूण साव जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

छत्तीसगढ़ महासमुन्द सांसद श्री चुन्नीलाल साहू जी
के साथ एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

दिल्ली में तिरंगा यात्रा निकालते हुए
एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

मीडिया से बात करते हुए
एस. राहुल प्रदेश अध्यक्ष

9451659736, 8887876144
अलका लहंगा एण्ड गिफ्ट सेन्टर
हमारे यहां दुल्हन के आकर्षक लहंगे - चुनरी एवं साइड लहंगे
व ज्वैलरी उचित मूल्य पर किराये पर मिलतें हैं
एवं दुल्हन का मेकअप किया जाता है
प्रो. दीपक साहू
बड़ागाँव झाँसी
प्रथम साहू
पता - कटरा माता मन्दिर के पास, मेन बाजार बड़ागांव, झाँसी
SS
8933847761,8545052099
KAASHVI
MAKE-UP STUDIO & ACADEMY
Beauty Creation
Mrs. India Beauty Queen Subtitle Winner
Mrs. U.P.
International Certified Make-up Artist
Shweta Sahu
Sarva Mangala Complex Mall (Basement) Allahbad Bank
Building, Manik Chowk, Sahar, Jhansi

लखनऊ में मा0 रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह जी के साथ श्री रामनरायन साहू, पूर्व सांसद (राष्ट्रीय अध्यक्ष) एवं श्री संजय साहू, प्रदेश प्रभारी उ0प्र0।

नई दिल्ली में श्री राजनाथ सिंह रक्षामंत्री से संगठन का प्रतिनिधि मण्डल मिला।

श्री संगम लाल गुप्ता जी को जीत की बधाई देते श्री राम नरायन साहू पूर्व सांसद

नई दिल्ली में श्री संगम लाल गुप्ता मा0 सांसद को अधिवेशन के लिए आमंत्रित करते हुए।

उमेश नन्दलाल साहू, राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष, पुष्प देते हुए।

समय परिवर्तन-सोच परिवर्तन-एक आवश्यकता

मित्रों एवं सभी सम्मानित स्वजातीय बन्धुओं आप सभी को मेरा स्नेह भरा सादर नमस्कार ।

बन्धुओ जैसा कि शीर्षक है, कि जो व्यक्ति या समाज समय परिवर्तन के साथ परिवर्तित नहीं होता या जिस व्यक्ति या समाज की सोच संकीर्ण रह जाती है, या तो वो गर्त में चला जाता है या फिर वर्तमान समय में इतना पीछे चला जाता है कि दुबारा से समयानुसार दूसरों से प्रतिस्पर्धा में आने में ना सिर्फ अत्यधिक समय का नुकसान उठाना पड़ात है, अपितु चार गुना ज्यादा परिश्रम करना पड़ता है।

जब कि दूसरी ओर व्यक्ति या समाज जो समय के अनुसार सोच को परिवर्तित कर लेते हैं एवं समय में होने वाले सामाजिक राजनैतिक, व्यापारिक परिवर्तनों को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं, वो दूसरे से बहुत आगे निकल जाते हैं, एवं दूसरो के लिए कामयाबी की मिशाल बन जाते हैं।

मित्रों कभी आपने विचार किया है कि जो समाज या जातियॉ दूसरों से आगे निकल जाते हैं उनकी इस तेज प्रगति के पीछे क्या कारण होते है?

मित्रों जो समाज समयानुसार उन्नति करते चलते हैं उनकी इस उन्नति के पीछे जो सबसे अहम पहल होता है, वह है वो है उस समाज में कार्य कर रहे सामाजिक, राजनैतिक नतृत्वकर्ता एवं समयानुसार उनके द्वारा बदलाव को अनुभव करने एवं जीने में परिवर्तन को ग्रहण करने की इच्छाशक्ति जब तक किसी समाज विशेष का नेतृत्व कर रहे लोग ही समयानुसार होने वाले बदलावों को ग्रहण करके जीवन पर लागू नहीं कर पायेगें तब तक वो अपने समाज के लोगों में किसी भी परिवर्तन को त्वरित रूप से ग्रहण करने की सोच कैसे पैदाकर पायेंगे।

बन्धुओं हम आप अक्सर इस बात की चर्चा किया करते है कि अपना साहू राठौर समाज सामाजिक व्यापारिक एवं राजनैतिक रूप से दूसरे समाजों से कैसे पिछड़ गया, कारण यही है कि हमारे समाज के नेतृत्वकर्ता स्वयं ही समय–समय पर होने वाले परिवर्तन को स्वीकार नहीं कर सके और न ही उनसे होने वाले लाभों को समाज को अवगत करा सकें। बन्धुओं अपने साहू राठौर समाज में हमारे पुरखों ने अपने बच्चों को परिवर्तन के दौर में भी दुकान में बैठना ज्यादा उचित समझा जबकि दूसरे समाजों ने अपने बच्चों को घर से बाहर जाकर नौकरी करने एवं दुनियादारी समझने को पूरा मौका दिया जिसका लाभ उनको सरकारी महकमें में ऊँचे पदो पर पहुँचने के द्वारा प्राप्त हुआ।

बन्धुओं कमोवेश यही स्थिति व्यापारिक और राजनैतिक क्षेत्र पर भी लागू हुई, जहाँ दूसरे समाजो ने व्यापारिक परिवर्तनों को सहज ही स्वीकार किया वहीं हमारे समाज में धारणा रही कि जो व्यापार पिता ने किया वही व्यापार आगामी पुश्तों को भी करना पड़ा, अक्सर देखा गया कि पुश्तैनी व्यापार के पिटने के बाद भी आगामी 5–6 पुश्ते समयानुसार परिवर्तन की हिम्मत ना कर पाने के कारण उसी व्यापार को मजबूरी में ढोती रही, जिसका दुष्परिणाम ना सिर्फ उस परिवार बल्कि समाज को भी झेलना पड़ा, कि समाज को उचित संख्या में धन कुबेर प्राप्त नहीं हो सके जिनके बूते समाज प्रदेश व देश में सभी क्षेत्रों में विशेष स्थान प्राप्त कर पाता।

इसी तरह बन्धुओं जब समय आया कि सभी जातियाँ राजनीति में अपने समाज की पहचान बनाने के लिए जूझ रही थी राजनीति में अपना मार्ग प्रशस्त कर रही थीं, ताकि उन जातियों को सरकार, सत्ता में उचित भागीदारी सम्मान मिल सके। परन्तु यह हमारे समाज का दुर्भाग्य ही रहा कि हम उस समय की मांग को समझ नहीं पाये एवं अपने बच्चों को व्यापारिक गुण ही सिखाते रहे।

मित्रों इस तरह राजनीति में पिछड़ने का खामियाजा भी अपने समाज को झेलना पड़ा, अपना समाज आज भी उत्तर प्रदेश में बड़ी राजनैतिक उपलब्धियाँ हासिल करने की कोशिश में लगा है जबकि दूसरे समाज हमसे कोसों आगे निकल गये हैं।

इसलिए बन्धुओं समय परिवर्तन के साथ सोच परिवर्तन अति आवश्यक है।

बन्धुओं, उम्मीद है आप इस सोंच को जीवन में आवश्यक रूप से स्थान देगें।

देवेन्द्र कुमार साहू
प्रदेश कार्यवाहक अध्यक्ष (उ.प्र.)
कानपुर, मो. 9936054842

बिना धोखा खायें आदमी की आँखें नही खुलती।

सरल पौष्टिक योग

जो महिलाएं 'नारी कल्याण पाक' तैयार का सेवन कर सकें उनके शरीर, स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य की तो छटा ही निराली होगी पर जो तैयार न कर सकें उनके लिए एक सरल, सस्ता और पौष्टिक योग प्रस्तुत कर रहे हैं–

सामग्री– उड़द का आटा, गेहूँ का आटा, जौ का आटा और चावल का आटा–चारों 500–500 ग्राम। शतावर, मुलहठी और सफेद मुसली–तीनों 50–50 ग्राम। धावड़े का गोंद 100 ग्राम, शक्कर, शुद्ध घी और सूखे मेवे जरूरत के अनुसार।

विधि– चारों आटों को घी में खूब अच्छा सेक लें। गोंद को घी में तल कर फूले निकाल कर मोटा–मोटा कूट कर रख लें। चारों आटों को 3 बार छान कर एक जान कर लें। तीनों दवाओं को खूब अच्छा कूट पीस कर महीन चूर्ण करके मिला लें। अब शक्कर की डेढ़ तार की चाश्नी बनाकर यह सब मिश्रण डालकर खूब हिला चला कर मिला लें और उतार कर, घी का हाथ लगी थाली में फैला कर, ऊपर से सूखे मेवे काटकर इच्छानुसार मात्रा में डालकर जमने के लिए रख दें। जब पाक जम जाए तब या तो बर्फी काट लें या फिर छोटे–छोटे लड्डू बांध लें।

सेवन विधि और लाभ– इसे अपनी रूचि और भूख के अनुसार मात्रा में सुबह चाय या दूध के साथ, खूब चबा–चबा कर नाश्ते के रूप में खा लिया करें। प्रायः घरेलू महिलाएं घर भर को खाना खिला कर ही खाती हैं और तब तक भूखी ही रहती हैं। ऐसी सूबह इस योग के सेवन से जहां उन्हें भूख नहीं सहनी पड़ेगी वहां पौष्टिक तत्वों से युक्त या नाश्ता करने से उनके शरीर को सुडौलता, पुष्टि और शक्ति भी मिलेगी। 1–2 बजे तक भूख मार कर भूखे रहने से, शरीर और स्वास्थ्य को जो हानियां होती हैं वे नहीं होंगी उलटे फायदे ही होगे।

हनुमान प्रसाद साहू
वरिष्ठ उपाध्यक्ष, लखनऊ–1
मो0नं0– 9839600540

अच्छे विचार

समय अच्छा हो या बुरा कुद देर में गुजर ही जाता है।

अगर आपका व्यवहार मैत्रीपूर्ण है तो सब आपके मित्र ही बनेगे, शत्रु नहीं।

सभी लोगों की सुने, पर अपने दिल की बात केवल कुछ खास ही लोगों से कहें।

रिश्ते कांच की तरह होते है, यदि इन्हें सम्भाल कर न रखा जाये तो यह बहुत जल्द टूट जाते है और साथ ही फिर चुभते भी बहुत है।

साहू इतिहास के पृष्ठो में

वेदों में वैश्य ;विशद्ध शब्द का प्रयोग किया गया है। उदार चरित, सेवा भाव स्वाभाविक गुण होता है। अनेक तरह के व्यापार करने के कारण अनेक उपवर्गों में आधुनिक खोजके अनुसार समस्त भारत में 800 से अध्कि ;पहले 742 संख्या थीद्ध क्षेत्रीय भाषा व बोल–चाल में प्रचलित हैं। जिसमें एक को साहू शब्द की संज्ञा दी जाती है जो सबसे पुराना शब्द मालूम होता है जिसका उल्लेख, स्कन्द पुराण व चन्दरवरदाई कृत ''पृथ्वीराज रासो'' में मिलता है सोलहवीं शताब्दी में सन्त कबीर दास जी के द्वारा रचित ग्रंथ 'साखी' में भी किया गया है जो प्रस्तुत लेख के संक्षेप में प्रस्तुत हैं। पृथ्वीराज रासो चन्दरबरदाई के द्वारा रचित ग्रंथ में अंतिम छप्पय में बतातें हैं कि विभिन्न जाति के लाग जब प्रधन बनते हैं तब वह किस प्रकार का व्यवहार करते हैं।

छप्पय स्मृति देखें:–

क्षेत्रिाय हो प्रधन, खाय खड़ो दिखाये ।
साहू होय प्रधनभरे ध्र राज थमावे।।

सन्त कबीर साहब द्वारा रचित ग्रंथ बीजक में पेज नं.135 व 136 से साखी संख्या 151 व159 में साहू शब्द का प्रयोग किया गया है–

1. साहू से भै चौखो, चौरहु से मैं हीत,
   तब जानहू गे जियरा, तब मार पड़ेगी तझ।।
2. साहू चोर चीन्हे नहीं अन्धा मति की हीन
   पारख बिना विनास है, कर विचार होऊ मीन।।

पौराणिक ग्रंथों में स्कन्द पुराण के छठवें समुल्लास में सत्यनारायण की कथा का वर्णन है जो साहू वैश्य बनियां की कथा ;घर–घर में सुनी जाती हैद्ध का वर्णन मिलता है। उन्नीसवीं शताब्दी आधुनिक काल में रचित ग्रंथ वैश्य मन्दिरम् रचयिता कविवर श्याम सुन्दर गुप्ता द्वारा रचित खण्ड काव्य में प्रथम अध्याय वैश्य वंश शीर्षक बहुत ही सुन्दर ढंग से वैश्य समाज में एकता, निकटता, सौहार्द का भाव दर्शाया गया है। जो समाज को कुछ जागृत करने का महत्वपूर्ण प्रयास है कुछ पक्तियां देखें–

अपना तन, मन, ध्न जन सेवार्थ लगाते
श्रेष्ठ आचरण के कारण ही वैश्य सेठ कहलाते।
संस्थान ध्र्मार्थ अनेकों, जन सेवार्थ चलाते,
अपनी साध्ु प्रकृति के कारण, वैश्य साहू कहलाते।
उपवर्गों की भूल भुलैया में वैश्य भावना खोई, हमें चाहिए आज वस्तुतः
गाँधी, भामा, दीनबंधु कोई।
आओ मिलकर कदम बढ़ायें, साहू राटौर एकता मंत्रा जगाएं
अब है राजनीति का पलड़ा, हर सेवा पर पड़ता भारी
जिसमें मिलती मान प्रतिष्ठा, सुख सुविधएं सारी।

–शिव सागर साहू
सह सम्पादक ''चेतना संदेश'' लखनऊ
मो. 9170139185

आर्थिक आधार पर आरक्षण से बंचित नागरिको से अपील

सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े अनुसूचित जातियों के आधार पर 22.% 5 आरक्षण दिया गया था। इसी प्रकार सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े अन्य पिछड़ा वर्ग (पिछड़ा वर्ग और अत्यंत वर्ग) का संविधान के अनुच्छेद–16 (4) के आधार पर 27 % आरक्षण दिया गया था।

सिविल रिट पैटिसन 930/1990 के दिनांक–16 नवम्बर 1992 के फैसला में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने क्रीमीलेअर सीमा से कम आय वाले अन्य पिछड़ी जातियों को आरक्षण पाने का हकदार माना था। जबकि सामान्यवर्ग को सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़ा नहीं होने के कारण आरक्षण से बंचित कर दिया और आरक्षण देने का अधिकतम सीमा 50% निर्धारित किया था।

संविधान के 124वॉ संशोधन में केन्द्र सरकार माननीय सर्वोच्च न्यायालय को द्वारा निर्धारित आरक्षण देने का अधिकतम सीमा 50% का अतिक्रमण करते हुये सामान्य वर्ग के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिये भारतीय संविधान के अनुच्छेद– 15 (6) में शिक्षण संस्थानों में नौकरियो में 10% तथा संविधान के अनुच्छेद– 16 (6) में सरकारी नौकरियों में10%आरक्षण देने का प्रावधान किये थे।

मण्डल आयोग के अनुशंसा के आधार पर अपने देश के समस्त जनसंख्यों का 52% अन्य पिछड़ी जाति 22.5% अनुसूचित जाति ओर अनुसूचित जनजाति तथा 22.5% सामान्य वर्ग की जनसंख्या है।

अन्य पिछड़ावर्ग सामाजिक शैक्षणिक और आर्थिक तीनों रूपों में पिछड़ा है। सामाजिक और शैक्षणिक आधार पर इन्हें 27% आरक्षण मिल गया है। आर्थिक आधार पर 52% जनसंख्या होने के कारण 20 % आरक्षण इन्हें मिलना चाहिये।

इसी प्रकार अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, सामाजिक शैक्षणिक और आर्थिक तीनों रूपों में पिछड़ा है। सामाजिक और शैक्षणिक आधार पर इन्हें 22.5% आरक्षण मिल गया है। आर्थिक आधार पर 22.5% जनसंख्या होने के कारण कम से कम 10% आरक्षण मिलना चाहिए

आरक्षण का उद्देश्य सरकारी नौकरियों में विभिन्न कोटियों के बीच प्रतिशत की समानता लाना है। संविधान के अनुच्छेद–14 मे भी समानता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आर्थिक आधार पर आरक्षण को सामान्यवर्ग तक सीमित रखना यह आर्थिक आधार पर आरक्षण से बंचित वर्गों को उपेक्षा की दृष्टिकोण कसे देखना और अनुच्छेद–14 के प्रतिकूल कदम उठाना हुआ। सामान्यवर्ग से आर्थिकरूप से अत्यधिक पिछड़ा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ावर्ग, अति पिछड़ावर्ग है। आर्थिक आधार पर आरक्षण देने के लिये 124वॉ संविधान करते वक्त अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अति पिछड़ा वर्ग को प्राथमिकता देनी चाहिये लेकिन 124वॉ संविधान संशोधन के वक्त इन वर्गों का ख्याल नहीं रखा गया।

हम आर्थिक आधार पर आरक्षण से बंचित सभी कोटियों के नागरिकों से निवेदन करते हैं कि आगामी चुनाव में आप सब अपना बहुमूल्य वोट उसी संसद या विधानसभा प्रत्याशी को देंगे जो आर्थिक आधार पर आरक्षण देने का वादा आपके साथ किया हों।

शिवजी प्रसाद सुधांशु
सेवानिवृत्त शिक्षक
मो0नं0– 9973478846
ग्रा0 खोडी, पो0 भढवन वाया–कुण्डल
प्रखंड–हसनपुर समस्तीपुर, बिहार

भारतीय नारी

इस मातृभूमि की धरती पर,
सदैव नारी का मान हुआ।
पर अन्य आ गये धर्मों से,
इसमें है अविशय हास हुआ।
मानव की विमल वृत्तियों में,
माँ की अनुभूति श्रेष्ठतम है।।
इस कारण ब्रहम की रचना में
नारी सबसे सर्वोत्तम है।
जिसको हम अधिक प्यार करते,
माँ कहकर सम्बोधित करते।
इस कारण ही इस धरती को,
माता कह सम्मानित करते।
वेदों को हमने ग्रंथ नही,
माँ कहकर ही सम्मान दिया
तुलसी के पावन पौधे को,
माँ तुलसी कहकर मान दिया।
यह प्रकृति अनूठी भी हमको,
प्राणों से बढ़कर प्यारी है।
इसलिये ही तो हमने इसको
माना माँ जैसी न्यारी है
यदि नारी का अपमान हुआ
मॉयें कैसे बच पायेंगी।
काली दुर्गा लक्ष्मी गौरी
फिर माँ कैसे रह पायेंगी।
राबरी गंधारी सरस्वती का
मान कहां बच पायेगा।
गौरव शाली माँ का दर्जा,
फिर शेष कहां रह पायेगा।
मन्दो तारा कुन्ती का,
कामार्व कहां बच पायेगा।
नारी महिमा का मेरूदण्ड
कैसे अच्छुण रह पायेगा।
वैसे माँ को नारी से अलग
करके हम देख नहीं सकते
नारी को अपमानित करके
दे माँ को मान न ही सकते।
मन्दिरों में कितने अब भी तो
नारी प्रवेश प्रतिवंधित है।
पूजा अर्चना तो दूर रही।
दर्शन करना भी बंछित है।
नेपाल के पशुपति मन्दिर में,
हिन्दू केवल प्रवेश पाता।
इस कारण गैर हिन्दुओं को
बाहर ही रोक दिया जाता।
इस गलत परम्परा के कारण
इन्दिरा जी दर्शन पा न सकी।
दरवाजें तक तो पहुंच गई
अन्दर प्रवेश पर कर न सकी।
यदि किसी धर्म का अनुयायी
संतृप्त मेरे आसाध्य से है।
इसका फिर कोई अर्थ नहीं।
वह भक्त कौन से धर्म में है।
ईश्वर ब्राहम्ण्ड का एक ही है।
प्रतिपादित धर्म सभी करते।
हम सब उसकी सन्तानें है,
यह भी स्वीकार सभी करते।

रचना कार
साहू बी0पी0 जायसवाल
लखनऊ
मो0 : 9415765495

असंभव एक शब्द है जो केवल मूर्खो के शब्दकोष मे पाया जाता है।

साउथ सिटी हास्पिटल एवं ट्रामा सेन्टर

दक्षिण क्षेत्र का एक मात्र समस्त सुविधाओं से परिपूर्ण हास्पिटल

डा० हिमांशु साहू
एम.पी.टी. (आर्थो.) वी.सी.पी. (मुम्बई)
पूर्व जयपुर गोल्डेन हास्पिटल, नई दिल्ली

डा० प्रिया साहू
बी.ए.एम.एस.
(स्त्री रोग विशेषज्ञ)

हेल्पलाइन : 7618971915, 9473864426

सुविधाएँ- ÷ सभी प्रकार के ऑपरेश (जनरल ऑपरेश, हड्डी के ऑपरेशन की सुविधा, स्त्री रोग, नाक, कान एवं गला के ऑपरेशन) की सुविधा।
÷ नार्मल डिलेवरी एवं ऑपरेशन द्वारा प्रसव सुविधा।, ÷ पित्त की थैली व पथरी के ऑपरेशन दुरबीन विधि द्वारा।
÷ बिना चीरा, बिना टांका बच्चेदानी का ऑपरेशन ÷ 24 घण्टे इमरजेन्सी सेवा व भर्ती की सुविधा।
÷ समस्त उपचार वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा किया जाता है। ÷ समस्त इलाज रियातयती दर पर किये जाते है।

X Ray एवं पैथोलॉजी सुविधा उपलब्ध

7डी,-1 जरौली फेस-1, 80 फिट कर्रही मेन रोड (निकट पानी की टंकी), कानपुर

सादर श्रृद्धांजली "उन्हें जो आज हमारे बीच नहीं रहे।

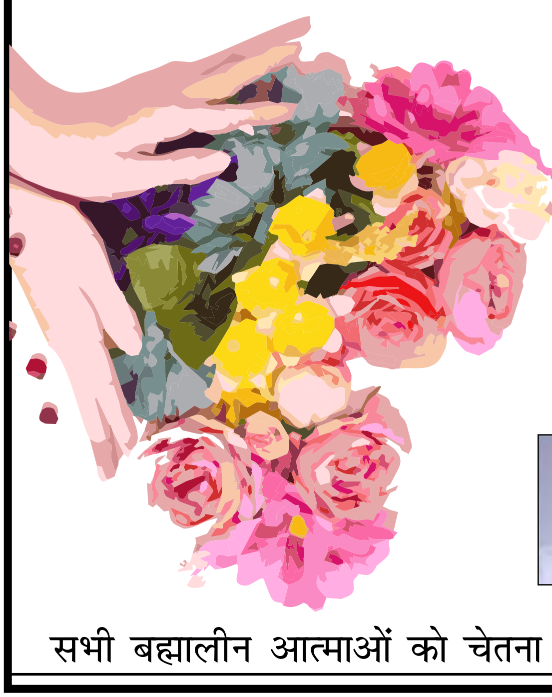

श्रृद्धेया सरस्वती वर्मा
निवासी– किदवई नगर कानपुर,
संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष–भा0तै0सा0रा0मा0स0, उ0प्रव

श्रृद्धेय भोपाल सिंह राठौर
पूर्व जिला अध्यक्ष एवं समाजसेवी, आगरा,उ0प्र0

श्रृद्धेय रमेश चन्द्र साहू
समाजसेवी
निवासी–441/114, ए,बालागंज, बरी रोड़,लखनऊ

22–07–2019

श्रृद्धेय मनसा राम गुप्ता
समाजसेवी
निवासी–शाहपुर,भगौली, बाराबंकी,उ0प्र0

सभी बह्मालीन आत्माओं को चेतना संदेश परिवार हार्दिक श्रृद्धांजली प्रेषित करता है।

व्यापार में सफलता के सूत्र

यूँ तो हर धंधा सफल होता है लेकिन जिस प्रकार गणित व विज्ञान के नियम हैं ठीक उसी प्रकार व्यापार के कुछ सिद्धांत है। चाहे आप छोटे से धंधा करो। लेकिन ये नियम जो मैं आगे लिखने जा रहा हूँ इनका पालन करोगे तो आप किसी भी धंधे में मात नहीं खा सकते है व कभी भी नुकसान नहीं खा सकते। अगर कुछ विपरीत परिस्थितियों के कारण नुकसान भी लग गया तो वही धंधा आगे चलकर उसकी भरपाई कर देगा इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। जैसे मकान बनाने में ईट, रोड़ी, बजरी, सीमेंट, लोहा, इत्यादि महत्वपूर्ण है। लेकिन इनसे भी महत्वपूर्ण वह मिस्त्री है। जो उस मकान को बनाएगा तभी श्रेष्ठ इमारत बन पाएगी। वर्ना ईट, रोड़ी, सीमेंट को बिगाड़ देगा और सही मकान भी नहीं बन पाएगा।

ठीक उसी प्रकार जिस व्यापार को आप करने जा रहे हैं उसको सफलता व ऊँचाइयों पर ले जाने वाले खुद व्यक्ति की सोच, मेहनत, निष्ठा, मनोयोग, ईमानदारी, ग्राहकों से सम्बन्ध लेन–देन की स्थिति व व्यापार की लागत व उस धंधे की जानकारी भी जरूरी है। मैं आपको कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दे रहा हूँ जो हर व्यापारी चाहे व पनवाड़ी हो, चाहे परचूनी वाला हो, चाहे सब्जी का व्यापारी हो चाहे बड़ा व्यापारी हो, चाहे किसी भी पेशे से जुड़ा हो अगर इन नियमों का पालन करेगा तो निश्चित ही सफल व्यापारी बनेगा। व्यापारी के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार है।

1. जो भी धंधा आप शुरू करें उसे शुरू करने से पहले दस बार सोंचे कि आपकी इसमें रूचि है या नहीं, अगर रूचि नहीं है घरवालों के दबाव से कर रहे है तो असफल होने से ज्यादा अवसर हैं सफलता के कम।
2. जिस भी व्यापार को करें प्रथम शुरूआत छोटे रूप में करें, कर्ज लेकर व्यापार न करें।
3. आशा व आत्मविश्वास के साथ करें कि यही धंधा मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ धंधा है और इसी धंधे को मेहनत से बड़ा व्यापारी बनकर दिखाऊँगा। यह आत्मविश्वास रखें।
4. ग्राहक को देवता माने व उसके साथ धोखाधड़ी न करें। कारण कि ग्राहक के कारण ही आपका परिवार पल रहा है। अतः आदर से बात करें जो वह बताये वही माल दें तो आपकी साख बढ़ेगी व खरीददार भी संतुष्ट रहेगा वह आपके प्रतिष्ठान का स्टार प्रचारक होगा।
5. क्वालिटी से कभी समझौता नहीं करें। क्वालिटी ही माल बेचें, घटिया माल से ग्राहक भी जाएगा और दस जगह बुराई करेगा।
6. माल पर्याप्त मात्रा में रखें। एक देशी कहावत है कि पाव तेल रखोगे तो पाव का ग्राहक आएगा। पीपा रखोगे तो पीपे का ग्राहक आएगा। आपकी दुकान में भी सभी तरह की वैरायटी मिले इस बात का ध्यान रखें।
7. उधार से सारा संसार चल रहा है परंतु पेमेंट मांगने से पहले ही देने की आदत बनावें तो आपको सस्ता भी मिलेगा और जितना चाहोगे उतना मिलेगा। जहां तक संभव हो नगद बेचो तो चैन की नींद आयेगी और कागजी कार्यवाही कम करनी पड़ेगी।
8. राजकीय टैक्स की चोरी न करें वर्ना टेंशन में सोओगे व टेंशन में ही धंधा करोगे। अतः

साफ–सुधरा हिसाब रखो और टैक्स जो भी बनता है समय पर अदा करो। हमेशा ग्राहक की शिकायत को संजीदगी से लो। उसकी शिकायत का तुरंत निराकरण करो तो ग्राहक कभी नहीं जाएगा। रेट कम ज्यादा मत करो। जो वाजिब मुनाफा हो लो तो फिर ग्रहक से माथा पच्ची नहीं होगा और ग्राहक आपको पूरा पैसा देकर जाएगा।

9. जिस भी विक्रेता से या फैक्ट्री से माल खरीदते है उनमें मधुर सम्बन्ध बनाकर रखो। कर्मचारी से यही व्यवाहर रखो। समय पर उनका वेतन का भुगतान करो।
10. रोज–रोज नए धंधे न बदलो, जो भी कर रहे हो उसकी बढ़ने की अनन्त संभावनांए हैं। अतः उसी धंधे को करते रहो और निपुण बनो।
11. व्यापार में साख बनाओं व साख को किसी भी कीमत पर न बिगड़ने दो। प्रामणिकता ही आपकी श्रेष्ठ पूंजी है।
12. अकुशल कर्मचारी व मुनीम कम वेतन के चक्कर में कभी मत रखो वरना चौगुना नुकसान होगा, इसी लिए कार्य में निपुण कर्मचारी व अन्य लोगों को ज्यादा वेतन देकर भी न छोड़े कहा गया है महंगा रोए एक बार सस्ता रोएं बार–बार।
13. जल्दी करोडपति बनने के चक्कर में उल्टा–सीधा व्यापार न करें, झूठ व हेराफेरी का सहारा न लो, नहीं तो आपका व्यापार डूब जाएगा।

आपके व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी, नेक कमाई ही जीवन में सुख शांति दे सकती है, उसी से सम्पन्नता बढ़ेगी व परिवार सुखी रहेगा व आपको असफलता का मुख नहीं देखना पड़ेगा।

–अंकित साहू
युवा प्रदेश कार्यवाहक अध्यक्ष
लखनऊ

सिन्दूर जहाँ

सिन्दूर जहाँ में बहुत किन्तु, कीमत चुटकी भर की होती।
जीवन तुझ बिन मैं ढोती हूँ, तुम होते तो मैं भी होती।

अन्तर्मन के अम्बुज खिलकर, अधराध र कोपल मुस्काती।
बिखरा मकरन्द सुगन्ध सुमन, प्यासे भ्रमरों को तड़पाती।।
जीवन य रसमय हो जाता, आँखों से कभी जो पी होती।
जीवन तुझ बिन मैं ढोती हूँ, तुम होते तो मैं भी होती।।

साँसों के तार चढ़ा देती, तेरी जीवन्ती वीणा पर।
रोमांचित तार–तार होती, कन्धे से लगा जब रखते कर।।
हम जीवन भर सुनते तुमको, आवाज 'सरस' जो दी होती।
जीवन तुझ बिन मैं ढोती हूँ, तुम होते तो मैं भी होती।।

मेरे मानस की मंजिल को, तुम अगर नाम अपना देते।
मैं खुद सिन्दूरी हो जाती, जो दूरी आप मिटा देते।।
जीवन पथ पर मेरे प्रियवर, इस तनमन की सुधि ली होती।।
जीवन तुझ बिन मैं ढोती हूँ, तुम होते तो मैं भी होती।।

आचार्य शैलेन्द्र राठौर 'सरस'

अम्बुज–कमल, मकरन्द–पराग, सुमन–फूल मानस–मन

आचार्य शैलेन्द्र राठौर
हरदोई उ0प्र0
मो. 9792756911

अच्छे विचार

जीवन में आगे बढ़ना है तो अंहकार और चापलूसी जैसी भावना को मन से मिटाना होगा।

आपकी चुप रहना ही सहमति देती है।

टहले और खुश रहें।

तनाव व मधुमेह भी दे रहे भूलने की बीमारी

बुजुर्ग भूल रहें है तो डिमेंशिया मानकर घर न बैठें, जांच कराएं।

लखनऊ! वृद्धावस्था में अगर कोई भूलने लगे तो लोग इसे डिमोंशिया मान लेते हैं, लेकिन भूलने की समस्या हमेशा डिमेशिया नहीं होती है। विटामिन की कमी, डायबिटीज, डिप्रशन से भी भूलने की समस्या हो जाती है। अगर उम्र 60 से ज्यादा हो तो सतर्क रहने की जरूरत है इसी उम्र में ब्लड प्रेशर, शुगर, प्रोस्टेट सहित अन्य बीमारियां भी घेर लेती है। ऐसे में दवाओं से ज्यादा खानपान पर ध्यान दे और जीवनशैली सुधारने की जरूरत होती है। अमर उजाला ने केजीएमयू के वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य के विभागाध्य प्रो0 श्रीकांत श्रीवास्तव से बातचीत की पेश है बातचीत के प्रमुख अंश ......

- बुजुर्गों मे भूलने की समस्यां की पहचान कैसे करें?
- एक बड़ी आबादी 60 साल से अधिक उम्र की है। इनमें एक बीमारी की पहचान डिर्मोशिया के रूप में की गई है। हालांकि भूलने की अलग–आलग वजहें होती है। बुजुर्ग मरीजों में से अधिकांश में भूलने की समस्या मिलती है। इसकी पहचान करने के लिए कुछ खास बातों का ध्यान रखना होता है, जैसे कि कोई सामान खरीदने गये। दो सामान ले आए और तीसरा भूल गये। रिश्तेदारों के नाम भूला, व्यक्तिगत जरूरत को भूल जाना। जरूरत के चीजों के रखे जाने के स्थान को भूलना इसके प्राथमिक लक्षण है। ऐसी स्थिति में डॉक्टर से मिलना चाहिए, ताकि पता चल सके कि भूलने की वजह क्या है?
- किन–किन वजहों से भूलने की समस्या हो जाती है?
- भूलने की समस्या कई कारणों से होती है। पहली वजह डिप्रेशन है। इससे करीब 45 फीसदी वृद्धजनों में भूलने की समस्या होती है। दूसरे नंबर पर आता है। डायबिटीज और फिर तीसरे नंबर पर डिर्मोसिया। इसलिए चिकित्सक से मिलकर जांच करानी चाहिए। फिर उसी हिसाब से दवाएं और जीवनशैली में सुधार की सलाह की जाती है। भूलने की समस्या को सीधे तौर पर डिर्मोशिया व अल्जाइमर्स डिर्मोशिया नहीं समझा जाना चाहिए। अगर रोगी को याद है कि वह भूल रहा है तो संभवतः यह डिर्मोशिया नहीं है। याददाशत में कमी के अन्य कारणों में विटामिन्स की कमी, थायराइड हारमोन में असंतुलन भी है।
- बुजुर्गों को तनाव से कैसे बचाया जाए?
- इसके बारे में परिवारीजनों के साथ ही बुजुर्गो को भी सचेत होना चाहिए। उन्हें इस बात पर गर्व करना चाहिए कि उन्होनें बेहतरीन जिंदगी जी ली है। वृद्धावस्था में इस बात की फिक्र नहीं करनी चाहिए कि उनके न रहने पर क्या होगा? बल्कि खुश रहने की कोशिश करें। किताबें पढ़े, फिल्में, देखे, सुबह और शाम पार्क में टहलें। ठहाका लगायें यह मान ले कि जो जिंदगी मिली, वह बेहतर थी। अपने बच्चों को खुद से बेहतर देने की कोशिश की। अब आगे वे वयस्क है। अपना भला बुरा समझ लेगें।

परिवारजनों की जिम्मेदारी है वृद्धजन को झिडकी न दें। उनकी बात न मानने लायक हो तो बीच का रास्ता निकालें। सीधे तौर पर नकारें नहीं, वृद्धजन को यह नहीं लगना चाहिए कि परिवार उनका निरादर कर रहा है। उन्हें खुश रखने की कोशिश करें। इसके बाद भी डिप्रेशन बना रहे तो डॉक्टर से सलाह लें।

- हम कैसे मानें कि बुजुर्ग तनाव के शिकार है?
- सामान्य आबादी में से 10 प्रतिशत लोग वृद्धावस्था कि डिप्रेशन से पीड़ित है। डिप्रेशन के बुजुर्ग मरीजों को इलाज करने वाले चिकित्सको को इस बात का गहनता से मूल्यांकन करना चाहिए कि ऐसे मरीजों में डिप्रेशन के लक्षण या सोचने समझने और याददाश्त क्षमता में कमी के लक्षण में से कौन से लक्षण प्रमुखता से पाए जा रहे है। वृद्धावस्था के डिप्रेशन के मुख्य लक्षणो में सेन्ट्रल प्रोसेसिंग स्पीड की कमी, अल्पकालीन याद्दाश्त में होने वाली कमी है। वृद्धावस्था का डिप्रेशन पार्किन्सन्स के 40 प्रतिशत रोगियों अल्जाइमार्स डिर्मोशिया के 20–30 प्रतिशत तथा स्ट्रोक के 30–60 प्रतिशत रोगियो में अन्य मानसिक बीमारी के रूप में उपस्थित रहता है। सामान्य तौर पर इसमें बेचैनी रहना, सिरदर्द, धड़कन का तेज होना, परिवार के लोग बात कर रहे हो तो उसमें रूचि न दिखाना, अकेले में कोशिश करना तनाव के लक्षण है। ऐसी स्थिति में इलाज कराना चाहिए। विटामिन बी, फोलिक एसिड की कमी की वजह से भी डिप्रेशन होती है। केजीएमयू में वृद्धजन की काउंसलिंग की जाती है। फिजिशियन अथवा न्यूरोलाजिस्ट से भी जांच कराई जाती है। कुछ दिन दवाएं लेने के बाद वे ठीक हो जाते है।
- क्या डिर्मेशियां का इलाज है?
- इलाज शुरू करने से पहले खून की जांचें की जाती है। मरीज की काउंसलिंग करके लक्षण देखे जाते है। इनके आधार पर स्थिति स्पष्ट हो जाती है कि बीमारी क्या है। फिर उसी हिसाब से दवांए दी जाती है। इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि भूलने की आदत का संबंध कई अन्य बीमारियों से है। जो डिर्मोशिया से कम हानिकारक है और उपचार से पूरी तरह से ठीक हो सकता है।
- वृद्धजनों की जांच की कौन–कौन सी सुविधायें है?
- सभी तरह की! यहाँ याद्दाश्त की बीमारी सही पहचान करने के लिए पहले काउंसलिंग की जाती है इसके लिए लक्षणों का गहनता से मूल्यांकन किया जाता है फिर रक्त संबंधी जांच कराई जाती है। मस्तिष्क स्कैन कराया जाता है।
- कई बार वृद्धजन बाजार के लिए निकलते है और अचानक गायब हो जाते है। यह क्या बीमारी है?
- ऐसी स्थिति में दिखे तो परिवारीजन को सावधान हो जाना चाहिए। आपके परिवार के बुजुर्ग रोज सब्जी ले आते है और किसी दिन भूल जाये अथवा सब्जी लेने जाते वक्त मंडी का रास्ता भूल जाये तो सावधान हो जाएं। इसे बुढ़ापे का असर न समझे बल्कि साइकियाट्रिस्ट को दिखाएं। यह डिप्रेशन भी हो सकता है।

डा0 शिवराम गुप्ता
लखनऊ
मो0 9307820643

12th, Two Days National Conference
07-08 September, 2019 @ Nagpur Maharastra
Bharatiya Tailik Sahu Rathore
Maha Sabha {Gandla / Teli}
Sabka Saath
Sabka Vikas
Sabka Vishwas
Andhra Pradesh
JAI HIND - JAI NAMO
Beti Bachao
Beti Padhao
Shri. Narendra Modi ji
Prime Minister of India
GR Prabhakar Gandla
State President BTSRMS
8019420711
Shri. Ram Narayan Sahu ji
National President BTSRMS
PC Gaddi Goudar Teli
MP Karnataka
M Ashok Kumar Gandla
Shiva Gandla
PNS Murthy Gandla
Rameswar Teli MP
Food Processing MoS
Sangam Lal Gupta
MP - UP State
AR Kumar Gandla
S Sambha Gandla
K HariBabu Gandla
Praveen Kumar Korpole Teli
Telangana State President
9390100002
Ramdas Tadas
MP Maharastra
Dr.Venkata Ramana Bachchu
Bhargav Raj Gandla
YSRCP Kuppam
KV Chandra Mohan Gandla
DEVAGALLA NAGESWARARAO

उ0प्र0 के माननीय उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्या जी से शिष्टाचार मुलाकात।

मा0 केन्द्रीय मंत्री डा0 हर्षवर्धन को पुष्पगुच्छ देते एस.राहुल।

मा0 केन्द्रीय मंत्री श्री रामेश्वर तेली को पुष्पगुच्छ देते एस.राहुल।

मा0 केन्द्रीय मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद को पुष्प देते एस.राहुल।

दैनिक जागरण के कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में विजय लक्ष्मी साहू।

कर्मवीर उमेश नन्दलाल शाहू

कृषि की अच्छी उपज व आय न होने के कारण बाबूजी श्री नंदलाल साहू अपने कुछ मित्रों सहित पूरे धनी (धनी का पुरा), तहसील–पट्टी, जिला प्रतापगढ़ (उ0प्र0) से दिनांक 20.04.1949 में नागपुर (महा0) का कर्मक्षेत्र के रूप में चयन कर चना भूजने का व्यवसाय प्रारम्भ किया। क्रमशः चना, पोहा, मुरमुरा एवं अन्य विविध व्यवसाय करते हुए बाबूजी ने जमीन खरीदने व बेचने का भी व्यापार करने लगे।

सर्व तेली साहू समाज के इतिहास का स्वर्णिम पल जब नागपुर (महाराष्ट) की धरा पर कर्मयोगी श्रीमती तारा बाई साहू एवं श्री नंदलाल साहू के गृह में एक बालक का अवतरण हुआ। बालक के सरल, विनम्र और तेज स्वभाव को देखकर माता–पिता ने बालक का नामकरण उमेश साहू रखा। आपकी सम्पूर्ण शिक्षा नागपुर (महाराष्ट्र) में सम्पन्न हुई।

आपका विवाह 26.05.1983 को लाल बंगला, जाजमऊ, कानपुर (उ0प्र0) निवासी कृषक परिवार श्रीमती राममूर्ति देवी एवं श्री गंगाचरण शाहू की पुत्री सुषमा साहू के साथ हुआ था। आप चार भाई उमेश शाहू (स्वयं), दिनेश शाहू, सुभाष साहू, सतीश साहू, एवं तीन बहन श्रीमती उमा चन्द्रकान्त विहाउत, श्रीमती मालती छेदीलाल शाहू, श्रीमती ममता अरूण कुमार साहू हैं। आपकी दो संतान राहुल शाहू एवं कुमारी रश्मि शाहू।

बाबू श्री नंदलाल शाहू के ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते व्यवसाय में परेशान होते देखकर शिक्षा अध्ययन करते हुये पिताजी के साथ व्यापार में भी हाथ बटाने लगे। जैसे–जैसे व्यापार गतिशील होता गया। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं अन्य विभिन्न आयोजनों में भी बढ़ चढ़कर भाग लेने लगे। बाबू जी द्वारा संचालित अनाज, पोहा, मुरमुरा आदि के थोक व्यापार के साथ–मेसर्स शाहू ट्रेडर्स अनाज बाजार, इतवारी नागपुर, साहू हाउसिंग फाईनेंस डेवेलपमेन्ट कम्पनी प्रा0लि0, शाहू बिल्डर्स एण्ड डेवलपर्स नागपुर, शाहू वृन्दावन लाल हाल नागपुर, शाहू बंदन सेनीटरी भापी, नागपुर आदि विविध फर्मों का सफल नेतृत्व करते हुये सम्पूर्ण भारतवर्ष में विभिन्न संस्थाओं में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। प्रमुख रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय शाहू वैश्य महासभा विवाह प्रकोष्ठ दिल्ली, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष–अखिल भारतीय वैश्य महासभा, गवर्नर स्नेही इन्टरनेशनल महाराष्ट्र, प्रदेश उपाध्यक्ष–महाराष्ट्र प्रान्तिय तेली समाज महासभा, कार्याध्यक्ष–शाहू समाज कल्याण सोसायटी नागपुर, उपाध्यक्ष– जिला कांग्रेस कमेटी नागपुर शासन सहित अन्य विभिनन सामाजिक संस्थाओं में तन–मन धन व समय का सहयोग देकर योगदान दे रहे हैं।

आपकी सामाजिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं अन्य विभिन्न क्षेत्रों की परस्पर गतिविधियों को देखते हुए राष्ट्रीय तेली शाहू युवा संगठन के द्वारा दिनांक 02.09.2017` 03.09.2017 तक कार्यक्रम स्थल शुभारंभ मैरिज हाल, गुप्ता गैलेक्सी, दांवड़ी नाका, कल्याण सील रोड, डोम्बीवली (पू0) जिला–थाने (महा0) में दो दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन शिविर का सर्व सम्मति से आपको सभापति मनोनीत किया गया। आपने अतिथियों एवं शिविरार्थियों के विचारों, सुझावों आदि को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए साहू समाज की दशा और दिशा को मजबूत करने के लिये चिन्तन शिविर का परिणाम व पांच प्रस्ताव समाजहित तथा राष्ट्रहित में अनुमोदित किये। आपके गतिविधियों और प्रशंसनीय कार्यों से आने वाली पीढ़ी को प्रकाश स्तम्भ के रूप में सदैव प्रकाश ऊर्जा मिलती रहेगी। आपने समाज के संघर्षशील, युवाओं, समाजचिन्तक बन्धुओं–बहनों से सदैव कहते हैं कि –

सोच बदलो सितारे बदल जायेंगे,
नजर को बदलो नजारे बदल जायेंगे।
कश्तियां बदलने की जरूरत नहीं,
दिशाओं को बदलो किनारे बदल जायेंगे।।

–सम्पादक

तैलिक वैश्य

वर्ण व्यवस्था स्थापित होते समय देश में उद्योगों का विशाल रूप से चलन नहीं हुआ था। अन्न का वस्त्र का वितरण मात्र वैश्य कर पाते थे। स्मृति काल आते–आते कृषि उपज में यन्त्रों द्वारा उपयोगी वस्तुयें बनाना आवश्यक हो गया और इन यंत्रों के उद्योगों का कार्य भी वैश्यों को सौंपा गया। प्रतीत होता है कि बिहार, बंगाल, तामिलनाडु व महाराष्ट्र अर्थात् देश के समुद्र तटीय अंचल के वैश्यों ने विदेशों से आयातित यन्त्रोत्पादित वस्तुओं में आयात को घटाने के लिये देश में ही उद्योग धन्धे प्रारम्भ किये थे। परन्तु देश का दुर्भाग्य है कि उद्योग धन्धों को स्मृतिकारों ने वह उच्च स्थान नहीं दिया जो शिक्षकों, राजकर्ताओं तथा व्यापरियों और महाजनो से प्राप्त था। परन्तु उन्हें चतुर्थ वर्ण में रखा जाना भी घोर अन्याय था। अतः उनके हाथ का पानी पीने की तो आज्ञा रही। यज्ञोपवीत तथा सोलह संस्कारो के कर्मकाण्ड से रहित से व्रात्यवत हो गये। प्रजातंत्र वाद और वोट बाहुल्य के बदलते युग में साम्यता के प्रचुर प्रवाह ने व्यपारी वैश्यों को बाध्य किया कि वे उद्योगरत अपने इन वर्ण बन्धुओं को साथ लें। स्वर्णकार बन्धु तो अयोध्यावासी आदि नाम रखकर वैश्य एकता को कायम रखे रहे। पर तैलिक, गन्धी एवं तन्तुवाय, प्रभृति जन वैश्य शब्द से निरादर के युग में भी चिपटे रहें। अब वैश्य महासम्मेलन ने सिद्धान्त बना दिया कि जो अपने को वैश्य कहे, वही वैश्य है।

इसी प्रकार शराब के उद्योग में लगे बन्धुओं से जब अन्य वैश्यों ने दुराभाव रखा तो वे अपने को क्षत्रीय कहने लगे। वैश्य महासम्मेलन के इस क्रान्तिकारी पग से प्रभावित हो जायसवाल बन्धुओं ने भी क्षत्रिय छाता से पृथक जायसवाल सभा बनाई है और वैश्य कहलाने में गौरव अनुभव करने लगे है।

इन आन्दोलनों के फलस्वरूप ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र के अतिरिक्त सब शेष हिन्दू जातियां वैश्य में समाहत होकर इस देश में लगभग 16प्रतिशत होकर इस देश का वर्चस्व अपने हाथ में लेने की स्थिति में हो गई है। पटना कारपोरेशन के चुनाव (1984) के समय बिहार राज्य वैश्य सभा ने यह परिभाषा अपना कर 28 में से 9 अपने द्वारा खड़े व्यक्ति पार्षद बनाने में सफलता प्राप्त की। यह इस अभियान का श्रीगणेश है।

इसी चिन्तन के अनुसार इस इतिहास में तैलिक वैश्यों का एक महत्वपूर्ण स्थान होगा। श्री राम नरायन साहू पूर्व सांसद राज्य सभा इसी तैलिक वैश्य समाज की देन है जो एक उद्योगपति के साथ समाज सेवक भी है। उ0प्र0 वैश्य महासभा की स्थापना में भी इनकी विशेष भूमिका रही। इनका पुत्र धीरज साहू एक आई.ए. एस. अधिकारी है, दूसरा बेटा उद्योग देखता है। दोनो पुत्रों की संभ्रान्त अग्रवाल परिवारों से शादियॉ हुई हैं। इन समस्त वैश्य उपजातियां को नजदीक लाने में तथा रोटी बेटी के सम्बन्ध बढ़ाने में, उत्तर प्रदेश वैश्य महासभा ने एक प्रमुख निभाई है। इस उपजाति के कुछ लोग साहू तथा कुछ लोग राठौर लिखते हैं।

साभार
वैश्य कल्याण पुराण स्कन्द
प्र0 संख्या–
अध्याय–25

दुनिया बदल सकते हैं गांधी जी के ये सिद्धांत

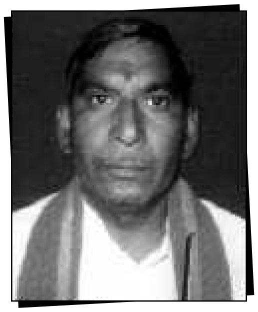

1. दुश्मनों को भी माफ करें

यह सिद्धांत बहुत सारे धर्मों और मतों में पाया जाता है। कमजोर कभी माफ नहीं कर सका। मजबूत शख्स ही दूसरों को माफ कर सकता है। आंख के बदले में आंख का सिद्धांत पूरी दुनिया को अंधा कर देगा।

2. कोई परफेक्ट नहीं होता

दुनिया में कोई परफेक्ट नहीं है। हमें हमेशा और बेहतर की कोशिश करनी चाहिए। ऐसा सिर्फ अपनी गलतियों को स्वीकार करने और उनसे सीखने से मुमकिन है।

3. खुद के प्रति ईमानदार रहें

हमें खुद के प्रति ईमानदार रहना चाहिए। अपने दिल की सुनें और उसी के मुताबिक आगे बढ़ें। असली खुशी तभी मिलती है, जब आप सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, उनके बीच में एक तालमेल होता है।

4. अपनी जिंदगी पर कंट्रोल रखें

अक्सर लोग नाकामियों के लिये दूसरों को दोषी ठहराते हैं। दूसरे लोगों का आपकी जिंदगी पर असर तो हो सकता है लेकिन अपनी जिंदगी कंट्रोल आपके अपने हाथ में होना चाहिए।

5. दुनिया को बदलने के लिए खुद को बदलो

घर बैठकर बदलाव की उम्मीद करने से कुछ नहीं होगा। दुनिया को बदलने की लिए घर से बदलाव शुरू करें। आपको देखकर दूसरे भी आगे आएंगे।

6. आइडिया पर ऐक्शन जरूरी

आजादी, लोकतंत्र और न्याय की बातें पेपर पर अच्छी लगती हैं। क्या होता, अगर इन पर अमल नही किया जाता। ऐक्शन से ही आइडिया को जिंदगी मिलती है।

7. आज में जीना ही बेहतर

लोग बीते कल या आने वाले कल में जीना पंसद करते हैं लेकिन सबसे अच्छा आज में जीना है। आज को बेहतर बनाकर हम आने वाले कल को सुधार सकते है।

8. दृढ़ बने रहें

अपने मिशन पर दृढ़ रहें। पहले लोग आपको नज़र अंदाज करेंगे, फिर आप पर हंसेगे, फिर आपसे झगड़ा करेंगे और फिर आपकी जीत होगी।

9. अपने साथियों में अच्छाई ढूंढें

हर इंसान में कमियां होती है। कमियां देखने के बजाय दूसरों की अच्छाइयां देखें। अच्छाई को आगे बढ़ाने से पूरी दुनिया की स्थिति सुधर सकती है।

10. लगातार विकास करते हुए आगे बढ़ें

हमारे अंदर सीखने और अपनी स्किल्स को बहेतर बनाने की काबिलियत है। लगातार बेहतर बनें। अगर बदलाव को स्वीकार नहीं करते तो टिक नहीं सकते।

–महेश साहू 'द्ददू'
केशव भादुड़ी रोड,
लखनऊ।
मो0 9335234963

अच्छे विचार

हर कोई दुनियाॅ को बदलने की बात करता है, लेकिन कोई भी खुद को बदलने के बारे में नहीं सोचता।

जब तक हम जिन्दगी को समझना शुरू करते है तब तक यह आधी खत्म हो चुकी होती है।

स्विटरजरलैंड

नाम तो आपने सुना ही होगा 'स्विटजरलैंड'
ऐसा देश जहाँ दुनिया का हर शादी शुदा जोड़ा अपना हनीमून मनाने के ख्वाब देखता है बर्फीली वादियों से ढका ये देश सुदंरता की अद्‌भुत कृति है। हरियाली हो या बर्फ, आंखे जिधर भी जांए पलक झपकना भूल जायें। दुनिया का सबसे सम्पन्न देश है स्विटजरलैंड। इस प्रकार से सम्पन्न इस देश की एक रोचक कहानी बताता हूँ।

आज लगभग 50 साल पहले स्विटजरलैंड में एक प्राइवेट बैंक की स्थापना हुई जिसका नाम है 'स्विस बैंक' इस बैंक के नियम दुनिया की अन्य बैंको से भिन्न थे। ये स्विस बैंक अपने ग्राहकों से उसके पैसे के रखरखाव और गोपनीयता के बदले उल्टे ग्राहकों से पैसे वसूलती थी। साथ ही गोपनीयता की गारन्टी। न ग्राहक से पूछना न पैसा कहाँ से आया? न कोई सवाल, न बयाना। साल भर में इस बैंक की ख्याति विश्वभर में फैल चुकी थी। चोर, बेईमान, नेता, माफिया, तस्कर, और बड़े बिजनेसमैन इस सबकी पहली पसन्द बन चुकी थी स्विसबैंक। बैंक का एक ही नियम था। रिचार्ज कार्ड की तरह एक नम्बर खाताधारक को दिया जाता था बस। जिसके पास वह नम्बर होगा बैंक उसी को जानता था। न डिटेल, न आगे पीछे की पूछताछ होती।

लेकिन बैंक का नियम था कि अगर सात साल तक कोई ट्रांजेक्शन नहीं हुआ या खाते को सात साल तक नहीं छोड़ा गया तो बैंक खाता सीज करके रकम पर अधिकार जमा लेगा। सात वर्ष तक लेने–देन न होने की सूरत में रकम बैंक की।

अब रोज दुनियाभर में न जाने कितने माफिया मारे जाते हैं। नेता पकड़े जाते है। कितने तस्कर पकड़े जाते है या मारे जाते है। कितनों को उम्रकैंद होती है। ऐसी स्थिति में न जाने कितने ऐसे खाते थे जो बैंक में सीज हो चुके थे। सन् 2000 की नई सदी के अवसर पर बैंक ने ऐसे खातों को खोला तो उनमें मिला कालाधन पूरी दुनिया के 40 प्रतिशत काले धन के बराबर था।

पूरी दुनिया का लगभग आधा कालाधन।ये रकम कल्पना से बाहर है। शायद बैंक भी नहीं समझ पा रहा था कि क्या किया जाए इस रकम का। क्या करें, क्या न करें।

ये सोचते सोचते बैंक ने एक घोषणा की और पूरे स्विटजरलैंड के नागरिकों से राय मांगी की इस रकम का क्या करें। साथ ही बैंक ने कहा कि देश के नागरिक चाहें तो यह रकम बैंक उन्हें बाँट सकता है और प्रत्येक नागरिक को एक करोड़ की रकम मिल जायेगी। सरकार की तरफ से 15 दिन चले सर्वे में 99प्रतिशत लोगों की राय थी कि इस रकम को देश की सुंदरता बढ़ाने में और विदेशी पर्यटकों की सुख सुविधाओं और विकास में खर्च किया जाए।

सर्वे के नतीजे हम भारतीयों के लिए चौंकाने वाले हैं, लेकिन राष्ट्रभक्त स्विटजरलैंड की जनता के लिए ये साधारण बात थी। उन्होनें हराम के पैसों को नकार दिया मुफ्त नहीं चाहिए ये स्पष्ट सर्वे हुआ।

चौंकाने वाला काम दूसरे दिन हुआ। 25 जनवरी 2000 को स्विटजरलैंड की जनता बैनर लेकर सरकारी सर्वे चैनल के बाहर खड़ी थी। **उनका कहना था कि जो 8 प्रतिशत लोग हैं मुफ्त की खाने वाले, उनके नाम सार्वजनिक करो।**

ये समाज पर और स्विटजरलैंड पर कलंक है। काफी मशक्कत के बाद सरकार ने मुफ्त की मांग करने वालों को दंडित करने का आश्वासन दिया, तब जनता शांत हुई।

रंजीत साहू
प्रदेश युवा महामंत्री
झांसी
मो0 9506091007

माता-पिता को समर्पित

1. बचपन में गोद देने वाली को बुढ़ापे में दगा देने वाला मत बनना.....
2. जिन बेटो के जन्म पर माँ–बाप ने हंसी–खुशी में लड्डू–पेड़े बांटे वही बेटे जवान होकर कानाफूंसी से माँ–बाप को बांटे...हाय कैसी करूणता।
3. माँ! पहले आंसू आते थे, और तू याद आती थी। आज तू याद आती है और आंसू आते है।
4. माँ! ''कैसी हो''.........इतना ही पूछने से उसे मिल गया सब कुछ।
5. मंगलसूत्र बेचकर भी तुम्हे बड़ा करने वाले माँ–बाप को ही घर से निकालने वाले ऐ युवा! तुम अपने जीवन में अमंगल सूत्र शुरू कर रहे हो।
6. माँ तुमने विद्वान–मनीषियों को जाना है, संसार तेरी ही दम से बना है तू मेरी पूजा है, मन्नत है मेरी, तेरे ही चरणों में जन्नत है मेरी ....
7. बंटवारे के समय घर की हर चीज पाने के लिए झगड़ा करने वाले बेटे, दो चीजो के लिए उदार बनना, जिनका नाम है माँ–बाप।
8. मातृभाषा–मातृभूमि का माँ कोई विकल्प नहीं।
9. ,जो मस्ती आंखों में है, मदिरालय में नहीं, अमीरी दिल की कोई, महालय में नहीं, शीतलता पाने के लिए, कहाँ भटकता है मानव! जो माँ की गोद में है, वह हिमालय में नहीं........ ।
10. माँ–बाप को सोने से न मढ़ो, तो चलेगा। हीरे से न जड़ो तो चलेगा। पर उनका जिगर जले और अंतर आंसू बहाएं यह कैसे चलेगा।,
11. जब छोटा था तब माँ की शैय्या गीली रखता था, अब बड़ा हुआ तो माँ की आंखे गीली रखता है। हे पुत्र! माँ को गीलेपन मे रखने की आदत हो गई है....
12. माँ–बाप के आंखों में दो बार आंसू आते हैं, लड़की घर छोड़े तब .... लड़का मुंह मोड़े तब....
13. माँ और क्षमा दोनो एक है क्योंकि माफ करने में दोनों नेक है।
14. घर का नाम मातृछाया व पितृछाया मगर उसमें माँ–बाप की परछाई भी पड़ने दें .... तो उस मकान का नाम पत्नी छाया रखना ठीक होगा...
15. बचपन में जिसने तुम्हे पाला, बुढ़ापे में उसको तुमने नहीं संभाला तो याद रखो कि तुम्हारे भाग्य में भड़केगी ज्वाला।
16. माँ–बाप को वृद्धाश्रम में रखने वाले ये युवा! तनिक सोंच कि, उन्होनें तुझे अनाथाश्रम में नहीं रखा उस भूल की सजा तो नहीं दे रहा है?
17. घर में माँ को रूलाए और माता–मंदिर में माँ की चुनरी ओढ़ाएं...याद रख ....मंदिर की माँ तुझ पर खुश तो नहीं .... शायद खफा जरूर होगी।
18. जिस नन्हें मुन्ना को माँ–बाप ने बोलना सिखाया था .... वह मुन्ना बड़ा होकर माँ–बाप को मौन रहना सिखाता है।
19. जिस दिन तुम्हारे कारण माँ–बाप की आंखों में आंसू आते हैं। याद रखना उस दिन तुम्हारा किया सारा धर्म आंसू में बह जाता है।
20. तुमने जब धरती पर पहला श्वास लिया, तब तेरे माता–पिता तेरे पास थे माता–पिता अंतिम श्वास लें, तब तुम उनके पास रहना।
21. पत्नी पसंद से मिल सकती है, माँ पुण्य से ही मिलती है। पसंद से मिलने वाली के लिये, पुण्य से मिलने वाली माँ को मत ठुकराना।
22. पेट में पांच बेटे जिसे भारी नहीं लगे थे, वह माँ बेटों के पांच फ्लैट्स में भी भारी लग रही है। बीते जमाने का या श्रवण कुमार का देश कौन मानेगा।
23. भले ही तुम लाखों करोड़ो रूपया कमाते हो याद रखना! यदि माता–पिता की आत्मा की तृप्त नहीं किया तो तुम्हारे कमाये हुये रूपये राख के ढेर के समान है।
24. आज तू जो कुछ भी है, वो ''माँ'' की बदौलत है क्योंकि उसने तुझे जन्म दिया माँ का साक्षात देवी है। माँ घर का प्राण है।

घर–घर की शोभा, माँ घर–घर का गहना।
परिवार में बहता रहे, स्नेह कीझरना।।

हीरालाल गुप्ता
प्रदेश महामंत्री (संगठन),उ0प्र0
मो0नं0–9415464619

दिनांक–06.01.2019 को आयोजित साक्षात्कार का विवरण
सम्पादक–रमाशंकर साहू

साथियों आज मैं ऐसे व्यक्ति का साक्षात्कार कर रहा हूँ जो कि परिचय के मोहताज नहीं हैं बल्कि वरिष्ठ समाज सेवी –सफल व्यापारी– कुशल राजनैतिक व्यक्तित्व के साथ–साथ उनके परिवार को शैक्षिक क्षेत्र में भी बुलन्दियां हासिल हैं, जिनको लोग प्यार से बाबू जी के नाम से जानते है और पूरा देश राम नरायन साहू आप राज्य सभा के पूर्व सदस्य है।

रमाशंकर साहू–सम्पादक– बढ़ते हुए की व्यस्तता के बावजूद समाज सेवा की भावना कैसे पैदा हुई?एवं समाज सेवा में कैसा अनुभव रहा?

राम नरायन साहू– हम तो व्यापार में पूरी तरह लिप्त थे समाज सेवा हमारे बड़े भाई शिव नारायन साहू जी करते थे लेकिन विषम परिस्थितियों के कारण उनका देहान्त होने के उपरान्त समाज ने हमें समाज सेवा के लिए चुना और कुछ सेवा करने के बाद मुझे दिली खुशी मिली और हम समाज सेवा में लग गये।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः फिर राजनीति में कैसे आना हुआ?

राम नरायन साहूः जब हमने समाज सेवा की शुरूआत की तो मैंने अनुभव किया कि राजनीति के क्षेत्र में भी सक्रियता जरूरी है और मेरे बड़े भाई भी कुछ राजनीति से जुड़े थे इसलिए मैं भी राजनीति से जुड़ता चला गया। राजनीति एवं समाज सेवा दोनों का एक दूसरे से कोई घनिष्ठ मतलब नहीं है। सर्वप्रथम जब मैनें मेयर का इलेक्शन लड़ा तो सबसे ज्यादा जरूरत मुलायम सिंह जी के थी तभी हमें समाजवादी से चुनाव लड़ने का मौका दिया। इसके बाद मैं समाजवादी पार्टी से जुड़ गया।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः जब एक संगठन पहले से था तो दूसरा संगठन बनाने की क्यों आवश्यकता पड़ी?

राम नरायन साहूः दूसरा संगठन जो पहले से था अपने मनमाने ढंग से संगठन का संचालन कर रहा था स्वार्थपरता के कार्यों में तो अधिक रूचि थी परन्तु सार्वजनिक कार्यों में कम, यह बात हमको अच्छी नहीं लगी इसलिए मजबूरी में दूसरा संगठन बनाना पड़ा।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः राजनीति के माध्यम से राज्यसभा कैसा अनुभव रहा?

राम नरायन साहूः चूंकि मैं समाजवादी पार्टी में था और मैं नहीं चाहता था कि संगठन के बारे में कुछ कहूँ यह मेरी विवशता थी वहाँ के ऊपर श्री मोहन सिंह जो थें कई अन्य नेता भी थे अखबारों में कई बार आया कि मुझे विधान परिषद में जाने के लिए चुन लिया गया है फिर पता चलता है कि मेरा नाम कट गया तो हमारे समाज का डेलीगेशन मुलायम सिंह जी से मिला और हमारे बारे में बताया कि ये हमारे नेता है बड़ी लगन एवं जिम्मेदारी से समाज की सेवा में लगे हए हैं, तब उसके बाद उन्हें विधान परिषद में भेजा गया। यद्यपि हमारी कुछ मजबूरियां थीं लेकिन यह सोच कर कि आगे जो कुछ होगा वह अच्छा होगा इसके बाद मुलायम सिंह जी ने मुझे राज्यसभा में भेजा। राज्यसभा गया तो राजनीति के बारे में मुझे नया अनुभव हुआ कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए राजनीति में सक्रिय होना जरूरी है तभी समाज को नई दिशा मिल सकती है। समाज के हित में लोगो के काम भी कराये। चूंकि हमारे परिवार का जुड़ाव व्यापार में अधिक था, परिवार में पहले से कोई इतने पावर प्राप्त है नहीं तो बहुत अच्छा काम कर सकते थे।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः राज्यसभा और बेटे के आई0ए0एस0 दोनो में क्या समानता देखते हैं?

राम नरायन साहूः दोनो में कोई समानता नहीं है क्योंकि धीरज साहू जी सरकार चलाने के लिए अपनी भूमिका निभाते है और राज्यसभा के कार्यों का

क्रियान्वयन अपने ढंग से होता है दोनों में कोई समानता नहीं है लेकिन हम लोग बड़ी ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा से अपनी–अपनी जिम्मेदारियॉ निर्वहन कर रहे हैं।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः समाजवादी पार्टी में 16 वर्ष रहने के बावजूद भा0ज0पा0 में आने का विचार क्यो आया?

राम नरायन साहूः जब मैं समाजवादी पार्टी में था तो 2–3 महीने बाद लखनऊ में साहू समाज का एक बहुत बड़ा सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन कराया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहले से ही मुलायम सिंह जी से उनकी सहमति प्राप्त करके प्रचार–प्रसार किया गया। जबकि पहले ही मुलायम सिंह जी को मेरे द्वारा स्पष्ट कर दिया गया था कि यह सामाजिक कार्यक्रम हैं अतएव इसमें महामहिम राज्यपाल जी को भी आने में कोई संकोच नहीं होगा, चुंकि मुलायम सिंह जी ने कार्यक्रम में आने के लिए हमें पूरी तरह से आश्वस्त किया था इसलिए मुख्य अतिथि के रूप में मुलायम सिंह को ही आमंत्रित किया गया परन्तु जिस दिन सामुहिक विवाह का कार्यक्रम था उन दिन मुलायम सिंह द्वारा समय दिये जाने के बावजूद कार्यक्रम में मौजूद नहीं हुऐ, जबकि मुलायम सिंह लखनऊ में ही मौजूद थे, यह मुझे अच्छा नहीं लगा बाद में मुझ अहसास हुआ कि साहू समाज एवं पिछड़े वर्ग के प्रतिनिधित्व में मेरा आगे बढ़ना उन्हें रास नहीं आया और मुझे डाउन करने का प्रयास किया गया इसलिए मैने समाजवादी पार्टी छोड़ दी।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः इतने कम समय मं 25 राज्यों तक समाज का संगठन फिर गैर हिन्दी भाषी प्रदेशों में अधिवेशन कराना सम्भव हुआ?

राम नरायन साहूः दूसरी सामाजिक संस्था अपनी मनमानी करती थी, यह शिकायत हमको भी थी फिर कई समाज सेवी लोगों से मिला और सर्वप्रथम संगठन की शुरूआत उ0प्र0 से हुई 7–8 वर्षों के बाद राष्ट्रीय स्तर पर हमारे विचार दूसरे प्रदेशों के समाज सेवियों से मिलते गये इस प्रकार साहू समाज के संगठन को बढ़ाने में कामयाबी मिले। गैर हिन्दी भाषी राज्यों कर्नाटक वालों ने आन्ध्रा वालों ने एक–दूसरे से जानकारी लेकर हमारे साथ मिलकर कार्य करने के उत्सुक हुए इस प्रकार पूरे भारत में संगठन को जोड़ने और संगठन को आगे बढ़ाने में कोई दिक्कत नहीं हुई क्योंकि हम निरन्तर बिना किसी निजी स्वार्थ और बिना किसी लालच के संगठन को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

रमाशंकर साहू–सम्पादकःभारतीय जनता पार्टी में भागीदारी से आप कितना सन्तुष्ट हैं?

राम नरायन साहूःभा0ज0पा0 राष्ट्रीय पार्टी है और मैं पार्टी में 08 वर्षों से हूँ लेकिन हमारे समाज की हिस्सेदारी चौथाई प्रतिशत से भी हम है। हमारे समाज के लोग पूरे मनोयोग से तैयार नहीं हैं। पार्टी यह देख रही है कि वहाँ के ऊपर पिछड़ो व सवर्णों की आपस में खींचातानी है जिससे हमारे समाज के लोगों की पूरी भागीदारी नहीं मिल पा रही है। लेकिन हमें भरोसा है पार्टी प्रतिनिधित्व अवश्य देगी थें उ0प्र0 में सम्भव नहीं हो पाया है परन्तु अनेकों लोग पार्टी में उच्च पद पर कार्य कर रहे हैं जैसे मा0 प्रधानमंत्री जी, झारखण्ड से मा0 मुख्यमंत्री रधुबर दास जी

रमाशंकर साहू–सम्पादकः आपके समाज से नरेन्द्र मोदी जी हैं उनको आप किस रूप में देखते हैं?और उनके कार्यों से देश किस दशा में जा रहा है।

राम नरायन साहूः मोदी जी लगातार 03 बार गुजरात के मुख्यमंत्री रहे और उन्होने अपनी मेहनत और काबिलियत की बदौलत आज प्रधानमंत्री का पद हासिल किया है। बी0जे0पी0 के कई नेता इग्नोर करना चाहते थे परन्तु विषम परिस्थितियों में भी मोदी जी ने कामयाबी पाई। एक प्रकार से यह कहा जा सकता है कि मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाना बे0ज0पी0 की मजबूरी थी। मोदी जी को हम भारत के वास्तविक विकास पुरूष के रूप में

देख रहे हैं। आज हमारे देश की ताकत दुनिया के चौथे व पांचवे पायदान पर उभकर आयी है, यह मोदी जी के अथक प्रयासों का ही परिणाम है।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः आपके समाज में गांधी जी, लोहिया जी, माँ कर्मा बाई जी, दुर्गादास राठौर जी, भामाशाह जी और अब मोदी जी फिर भी राजनीति में उचित भागीदारी क्यों नहीं साहू–राठौर समाज की।

राम नरायन साहूः हमारे समाज को उचित भागीदारी ने होने के पीछे मुझे यही कारण समझ में आता है कि हमारे समाज के लोग बढ़–चढ़ कर राजनैतिक क्षेत्र की गतिविधियों में अपनी भागीदारी नहीं दे पाते हैं जिसके कारण किसी भी पार्टी में समाज को उचित भागीदारी नहीं मिल पा रही है क्योंकि सभी पार्टियां पहले यह देखती हैं कि कौन व्यक्ति और किस समाज से लोग तन–मन–धन में पार्टी के प्रति समर्पित भाव से कितनी मात्रा में और कितने अधिक समय से योगदान दे रहे हैं।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः 30 वर्षों से लखनऊ में लगातार समाज की बैठक करते हैं इसका रिजल्ट क्या मिला आप इससे कितना सन्तुष्ट हैं।

राम नरायन साहूः वर्षों 1994 में लखनऊ में साहू राठौर समाज की रैली की थी जिसमें लगभग 5 लाख पूरे उ0प्र0 से लोग बहुत बड़ी तादात में आये थे यह एक बड़ी जागरूकता का उदाहरण है। साहू समाज की राजनैतिक क्षेत्र में भी जागरूकता बढ़ी है साहू समाज पूरी तरह से जाग्रत हो चुका है। मैं समझता हूँ कि जितनी लोग रूकावट डालेगे उतने ही आत्म विश्वास के साथ साहू समाज के लोग आगे बढ़ेगे। इससे मैं पूरी तरह से सन्तुष्ट हूँ।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः आपके जीवन की ऐसी घटनायें जो आपको प्रभावित की हों?

राम नरायन साहूः राज्य सभा में श्री जनेश्वर मिश्र को 25 मिनट का समय मिला था जिसमें से 05 मिनट का समय मुझे दिया गया था मैं समझता हूँ कि राज्यसभा में मेरा सबसे अच्छा भाषण था। मेरा दूसरा भाषण जिसमें कोई समय निर्धारित नहीं था सार्वजनिक तौर पर विस्तार से मैनें जो विचार रखे थे पूरे सदन ने सराहा। मुझे आज तक जब भी महसूस करता हूँ अच्छा महसूस करता हूँ।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः कोई ऐसा राजनैतिक घटनाक्रम जिसमें आपको सबसे ज्यादा गुस्सा आया हो?

राम नरायन साहूः कांग्रेस की सरकार थी दिल्ली में 14 राठौर लोगो को कत्ल हुआ था लोकसभा में इस मुद्दे को लेकर मैं बेल में चल गया लेकिन हमारी ही पार्टी के सांसद मेंरे पीछे नहीं आये जबकि इन सांसदो से आपस में वार्ता करके इस मुद्दे को उठाने की आम सहमति पहले से ही बन गई थी। इसके बावजूद भी कोई सांसद मेरे पीछे नहीं आया इस पर बाम्बे के अबू हसन आजमी एवं अन्य सांसदों पर भी मुझे बहुत गुस्सा आया था।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः अपने जीवन में अपना आदर्श किसे मानते हैं उनसे अपने जीवन में क्या बदलाव पाते हैं?

राम नरायन साहूःमैं अपना आदर्श राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को मानता हूँ मैनें इनके जीवन से प्रेरणा लेकर सदैव सादगी, ईमानदारी, एवं कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करते हुए अपना सैद्धान्तिक जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

रमाशंकर साहू–सम्पादकः व्यापार में व्यस्तता के बावजूद परिवार में शिक्षा का महत्व कैसे समझ में आया?

राम नरायन साहूः मुझे वह दिन याद आता है कि जब मैं 15–16 वर्ष का था तो एक परिवार में गया और देखा कि इनके यहाँ बच्चों की पढ़ाई का बड़ा ही अच्छा माहौल है तो मैने सोचा कि हमें भी इसका अनुकरण करना चाहिए। हमने भी अपने परिवार के बच्चों के नाम इंग्लिश स्कूलों में लिखवाये और व्यापार की व्यस्तता के बावजूद बच्चों की पढ़ाई की नियमित देख–रेख में लगा रहा फिर बच्चें आगे बढ़ते गये और बेटी डाक्टर बनी और पूरा

प्रयागराज के कार्यक्रम में श्री प्रहलाद मोदी श्री राम नारायन साहू एवं डा नीता साहू।

लखनऊ में मा0 राजनाथ सिंह के सामने बीजेपी की सदस्यता लेते श्री संजय साहू।

श्री संगम लाल गुप्ता मा0 सांसद को प्रतीक चिन्ह देते श्री रामनरायन साहू पूर्व सांसद।

नई दिल्ली में मा0 सांसद वर्धा श्री रामदास तड़स को आमंत्रित करते हुऐ।

नई दिल्ली में मा0 सांसद सीतामढ़ी श्री सुनील कुमार पिन्टू को आमंत्रित करते हुए।

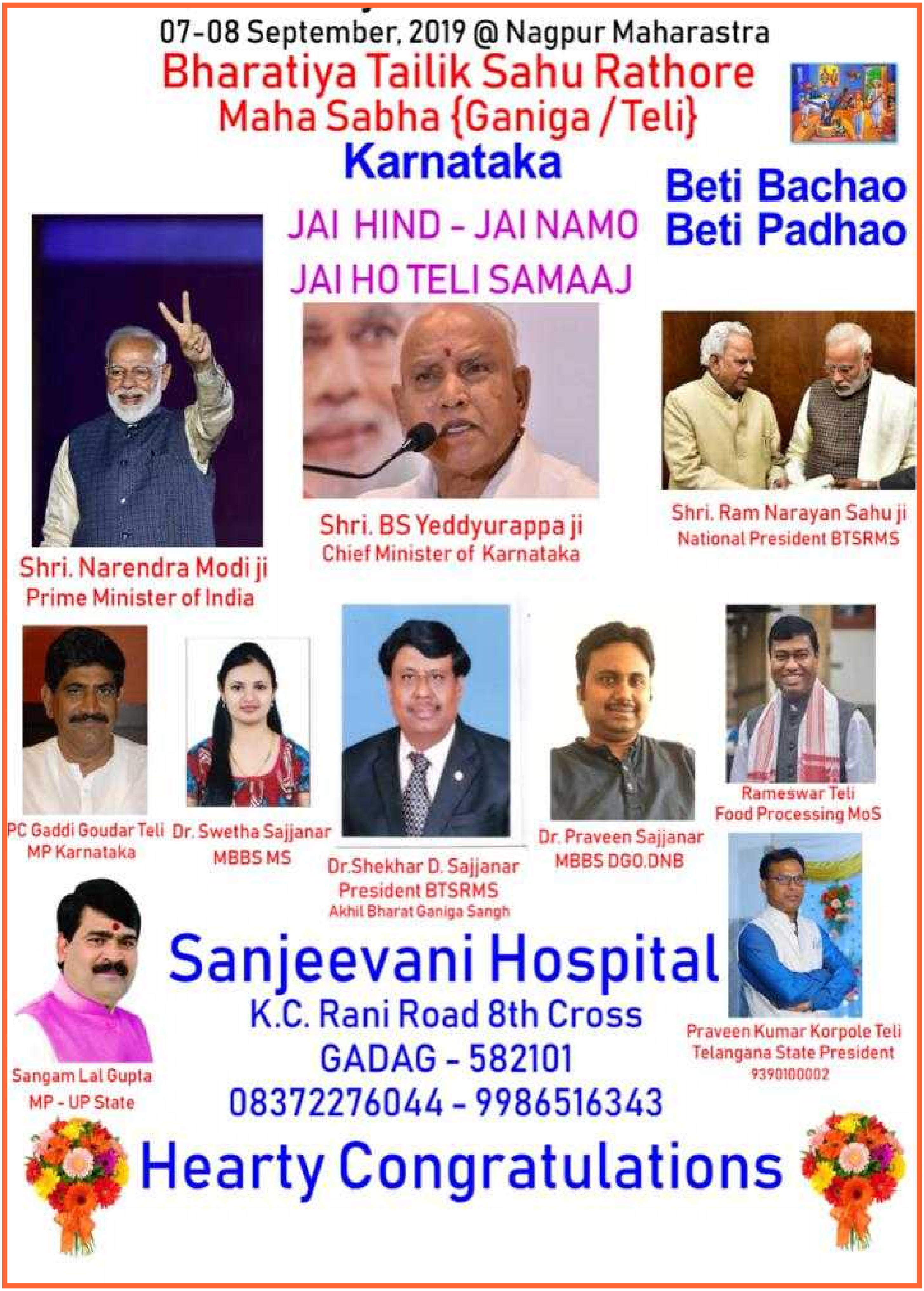
07-08 September, 2019 @ Nagpur Maharastra
Bharatiya Tailik Sahu Rathore
Maha Sabha {Ganiga / Teli}
Karnataka
Beti Bachao
Beti Padhao
JAI HIND - JAI NAMO
JAI HO TELI SAMAAJ
Shri. Narendra Modi ji
Prime Minister of India
Shri. BS Yeddyurappa ji
Chief Minister of Karnataka
Shri. Ram Narayan Sahu ji
National President BTSRMS
PC Gaddi Goudar Teli
MP Karnataka
Dr. Swetha Sajjanar
MBBS MS
Dr.Shekhar D. Sajjanar
President BTSRMS
Akhil Bharat Ganiga Sangh
Dr. Praveen Sajjanar
MBBS DGO.DNB
Rameswar Teli
Food Processing MoS
Sangam Lal Gupta
MP - UP State
Sanjeevani Hospital
K.C. Rani Road 8th Cross
GADAG - 582101
08372276044 - 9986516343
Praveen Kumar Korpole Teli
Telangana State President
9390100002
Hearty Congratulations

परिवार आज उच्च शिक्षा के माध्यम से उच्च व्यापार में लगे है मुझे आज भी वह दिन याद है कि एक दिन स्कूल से घर तक आया। इस प्रकार अपने परिवार को उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर करने का भरसक प्रयास किया।

रमाशंकर साहू–सम्पादकःआजादी का दिन आपको याद होगा देश के बदलाव में अभी तक किस प्रधानमंत्री को बेहतर प्रधानमंत्री पाते हैं?

राम नरायन साहूःजहाँ तक बेहतर प्रधानमंत्री की बात हैं तो मैं लाल बहादुर शास्त्री जी को जिन्होनें जय जवान, जय किसान का नारा देकर देश को विकास की राह पर आगे बढ़ाया। दूसरा प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को मानता हूँ जिन्होनें देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के क्षेत्र में विकास के क्षेत्र में, देश की रक्षा शक्ति को सुदृढ़ करने के क्षेत्र, तथा देश की सामाजिक समरसता के लिए अर्थात् हर क्षेत्र में देश के सर्वांगीण विकास हेतु दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ निरन्तर पूरी सत्यनिष्ठा एवं कर्तव्यनिष्ठा से लगे हैं। वर्तमान समय में हमारे देश का नाम अग्रणी देशों के साथ सम्मानित स्थान पर आ चुका है, मेरा मानना है कि यह उपलब्धियॉ मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का अथक प्रयासों का ही परिणाम है।

धन्यवाद्

सम्पादक चेतना सन्देश पत्रिका
(त्रैमासिक)

पाँच लोगो को नया जीवन दे गए -रवि राठौर

फाइल फोटो

16 अगस्त को सड़क हादशे में घायल ब्रेन डेड हो जाने के कारण परिवार के सदस्यों ने अंगदान कर पाँच लोगों को नया जीवन दिया है और परिवार के सदस्यों ने नाम अमर कर दिया है दो लोग दुनिया देख सकेंगे गुर्दे और लीवर से तीन मरीजों को नई जिन्दगी मिली है बेटे के पिता श्री श्याम किशोर राठौर निवासी डालीगंज, लखनऊ उ0प्र0 साधरण व्यवसाय से परिवार का पालन करने वाले रवि रठौर को अंगदान खुशियों की लहर दौड़ गयी। महादानी की खबरों को राजधानी के सभी समाचार पत्रों ने स्वागत धन्यवाद व आभार देकर प्रमुखता से छापकर, सम्मान बढ़ाया है आदर्श समाज के प्रभात के सन्त की अनुपस्थिति सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की सूक्ति चरित्रार्थ किया है, चेतना संदेश पत्रिका परिवार, सराहनीय अनुकरणीय पहल की भूरि–भूरि प्रशांसा करता है और बृहमलीन आत्मा को हार्दिक श्रृद्धाजंलि प्रेषित करता है शत्–शत् नमन करता है।

–सम्पादक

गरम पानी पीने के फायदे

जापान के चिकित्सकों के शोध से यह ज्ञात हुआ है कि प्रातः काल उठने के बाद प्रतिदिन 2 गिलास गरम पानी से कई बीमारियों का निवारण करने में सहायता मिलती है। जैसे–

(1) सिरदर्द (2) कब्ज

दस दिनों में लाभ

(1) पाचन संबंधी गड़बड़ी
(2) नाक, कान, गला संबंधी विकास
(3) भूख न लगना (जठाराग्नि मंद होना)

पंद्रह दिनों में लाभ

(1) कष्टार्त्तव (स्त्री रोग) (2) कफ संबंधी रोग

तीस दिनों में लाभ

(1) रक्तचाप (2) घुटने का दर्द (आंशिक लाभ)

चार माह में लाभ

(1) कोलेस्ट्रॉल (2) अस्थमा

छह माहमें लाभ

(1) नसों के ब्लाकेज

शराब, गुटखा, तम्बाकू, पान मसाला, सिगरेट–बीड़ी (नशा) के दुष्प्रभाव तथा नशा छोड़ने के अचूक उपाय

मित्रों, नशा भी एक प्रकार का हो, सदैव हानिकारक ही होता है। किसी भी प्रकार की नशीली वस्तु का सेवन से आंतो की बीमारी, आँखों की बीमारी, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, दमा और सॉस का रोग, टी0बी0, जवानी में बुढ़ापा जैसी बीमारियाँ होती है। जिन परिवार में लोग नशा करते है, उनमें अधिकांश रूप से गरीबी अशिक्षा, बीमारी एवं अपराध पाया जाता है। हमारे देश में प्रतिवर्ष नशे में 14 खरब रूपये खर्च हो जाते है। शराब पीने वालो में 27 प्रतिशत मस्तिष्क रोग, 30 प्रतिशत फेफड़े के रोग एवं 24 प्रतिशत अपच रोग से मर जाते हैं। हर पांच व्यक्तियों की मृत्यु में एक का कारण तम्बाकू है। सिगरेट–बीड़ी पीने से 25 प्रतिशत हृदयाघात, 30 प्रतिशत कैंसर एवं 75 प्रतिशत अस्थमा होता है। 60प्रतिशत से अधिक सड़क दुर्घटनायें नशे के कारण होती है। ज्यादातर चोरी, डकैती, बलात्कार जैसे जघन्य अपराध नशा करने के बाद ही किये जाते है। घरेलू हिंसा का प्रमुख कारण भी नशा ही है। यदि कोई व्यक्ति नशे में अपना 10रूपया रोज भी खर्च कर रहा है तो उसका एक वर्ष में तीन हजार, छः सौ पचास रूपये (3,650) खर्च होगा और इस प्रकार उसका 30 वर्षों से पन्द्रह लाख, तीन हजार नौ सौ रूपये (15,30,900) खर्च हो जायेगा। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति 50/–रूपये प्रतिदिन नशे में खर्च कर रहा है तो उसका एक वर्ष में अठारह हजार, दो सौ पचास रूपया (18,250) खर्च हो जायेगा और 30 वर्षों में इसी तरह उसका छियत्तर लाख, चौवंन हजार, पांच सौ रूपया (76,54,500) खर्च हो जायेगा। यह कोई छोटी धनराशि नहीं है। आप इस धनराशि से इन वर्षों में अपने परिवार के लिये बहुत कुछ अच्छा कर सकते है।

भगवान आपको सुधरने का एक भी मौका दिये बिना कम उम्र में अपने पास बुला ले या फिर बाकी की जिदंगी हृदयाघात, अपंगता और लाइलाज बीमारियों से ग्रस्त कर दें और तत्पश्चात् आपको पछताना पड़े व आपके स्वजन भी आपको माफ न करें। ऐसी स्थिति न आने दें।

व्यसनों ने आपको नहीं पकड़ा है बल्कि आपने ही व्यसनों को पकड़ रखा है इस बात को स्वीकार कर आज ही व्यसनमुक्त होने का शुभ संकल्प करे और इससे छुटकारा पाना चाहते है ता आज से ही निम्न उपाय करना आरम्भ कर दें।

1. नशा करने वाले मित्रों की संगत की बचिये और अच्छे मित्र तलाशिये।
2. जेब में व घर में नशें की सामग्री न रखें।
3. बच्चों के द्वारा बााजार से कोई भी नशे की चीज न मंगवाये।
4. आप किसी भी रचनात्मक कार्य से जुड़ें रहें, खाली समय में ही नशे की याद आती है।
5. नकारात्मक विचारों से दूर रहें। नशा नहीं करूंगा तो पाखाना साफ नहीं होगा, ऐसी भ्रान्तियां मन मे ंन पालें।
6. किसी त्योहार, यज्ञ, कथा अथवा तीथयात्रा जैसे अवसर पर दृढ़ संकल्प के साथ नशा त्याग दें और फिर शुरू करने का कोई बहाना न खोजें।
7. नीम के कोमल पत्ते 8–10 नग प्रतिदिन प्रातः व सायंकाल खाली पेट खायें।
8. नीबू शहद का पानी का सेवन दिन में कम से कम दो बाद अवश्य करें।
9. यज्ञ की दिव्य शक्तिशाली सुगन्ध, गायत्री मंत्र के प्रभाव से नशा करने की इच्छा कम हो जाती है।
10. नाड़ी शोधन, भ्रामारी प्राणायाम तथा कपालभाति रोज तीन से पांच मिनट तक अवश्यक करें।
11. जीवन का आनन्द लेने के उपाय और भी है। अपने काम के दबाव, थकान तनाव से बचने के लिये आप संगीत, खेल, मनोविनोद, अच्छी पुस्तकों आदि का सहारा ले सकते है।
12. अपने अभिभावक और परिवारजनों को अपना मित्र बनाइये। अपनी चिंता, परेशानी, कठिनाइयों की

बातें दिल खोलकर उनके सामने रखिये।

13. दैनिक उपासना और सत्साहित्य का अध्ययन करते रहिये।
14. गायत्री मंत्र का जाप करने से व्यक्ति सतोगुणी बनता है और उसकी संकल्प शक्ति दृढ़ होती है। प्रातःकाल गायत्री मंत्र का जाप करें और ऐसी भावना करें कि मैं नशे से छुटकारा पा लिया है।

यदि आपने इन उपायों के माध्यम से नशे को छोड़ दिया तो आप निरोगी काया पा सकत हैं, आपके धन की बचत होगी, परिवार में प्रेम व शान्ति रहेगी, दुर्घटनाओं से असमय मौत में कमी आयेगी, दुराचारों की सामाप्ति होगी, शरीर में चुस्ती फुर्ती रहेगी, आपको व आपके परिवार को समाज में सम्मान मिलेगा और आप खुशहाल जिन्दगी जियेगें और एक सुरक्षित सामाजिक वातावरण बनेगा।

मुकुल कुमार साहू
राजाजीपुरम लखनऊ
मो0नं0–8004906262

अच्छे विचार

नफरत करना आसान है जबकि प्रेम करना मुश्किल इसलिए शायद बुरी चीजें आसानी से मिल जाता है और अच्छी चीजों को पाना मुश्किल होता हैं अन्त में जैसा करो वैसा बोलो, जैसा बोलो वैसा करो।

सत्य, अच्छाई व उपयोगिता
प्रेरक प्रसंग

महान दार्शनिक सुकरात से एक बार किसी परिचित ने कहा, 'मैने आपके मित्र के बारे में कुछ बातें सुनी है, जो मै आपको बताना चाहता हूँ। सुनते ही सुकरात ने कहा,

'आपके कुछ बताने से पहले मै 'तीन कसौटियों का परीक्षण' करना चाहता हूं। इसमें पहली कसौटी सत्य की कसौटी है। क्या जो बात आप मुझसे बताएंगे, वह पूर्णतः सत्य है? परिचित ने कहा, 'मैने ऐसा सुना है।'

इस पर सुकरात ने कहा, ' इसका अर्थ है कि आप बात की सत्यता के प्रति पूरी तरह आश्वस्त नहीं ह। चएि, अब दूसरी कसौटी का प्रयोग करते है, जिसे मैं अच्छाई की कसौटी कहता हूं। मेरे मित्र के बारे में आप जो भी बताने जा रहे है, क्या उसमें कोई अच्छी बात है?

'नही।' परिचित ने कहा।

सुकरात ने कहा, 'इसका मतलब यह है कि आप मुझे जो कुछ सेनाने वाले थे, उसमें कोई भलाई की बात नहीं है। आखिरी कसौटी है उपयोगिता की कसौटी। क्या अपकी बात मेरे किसी काम की है? नही, ऐसा तो नही है' परिचित ने असहज हाते हुए कहा।

'जो बात आप मुझे बताने वाले थे, वह न तो सत्य है, न ही भली है और न ही भली है और नही मेरे काम की है, तो मै उसे जानने में अपना कीमती समय क्यो नष्ट करूं? सुकरात ने जवाब दिया।

कथासार– सत्य, अच्छाई और उपयोगिता की कसौटी पर कसकर निरर्थक बातों को सुनने में समय नष्ट करने से बचा जा सकता है।

तैलिक समाज की उपजातियाँ कौन– कहाँ

क्रम	प्रदेश/प्रान्त	उपजातियाँ/सरनेम
1	आन्ध्र प्रदेश	चेट्टी, शेट्टी, गाण्डला, अमरावती, लिंगइन
2	अरूणांचल प्रदेश	गहलोत, ओमर कान, गरई
3	असम	साहू, साहा, यात्री, झरियां, माथी
4	बिहार	साहू, राठौर, शाह प्रसाद, गाण्डला, कश्यप, डे, गौड़, गुप्ता
5	छत्तीसगढ़	तैलिक, श्री वैश्य, गोराई, कुण्डु, साहू
6	गोवा	गुल्हा, परनामी
7	गुजरात	राठौर, धांची, मोदी, स्नेही मोढ़
8	हरियाणा	तिलक, नागर
9	हिमांचल प्रदेश	बागिन वैश्य, न्यारिया
10	जम्मू कश्मीर	चौधरी, बाथम
11	झारखण्ड	बनियार, सुरैयया, गौड़, साहू, जायसवाल
12	कर्नाटक	बघेर वार, गनिया, लारी, होंडा, ब्याहत
13	केरल	जैस, अम्बानी
14	मध्य प्रदेश	साहू, राठौर, साव, गुन्दालिया, गुप्ता, नगराटे, झिझोरिया
15	महाराष्ट्र	साहू, राठौर, परदेशी, जैसवार, गंगराठे, गुप्ता, अम्बानी
16	मणिपुर	चोटि्टयार, खमौरा
17	मेघालय	तैलंगन, गोंन्दला
18	मिजोरम	वैश, बानियार
19	नागालैण्ड	शास्त्री, लाल
20	उड़ीसा	साहू, साव, बघेरवार, सेठी, नन्दी, कुमार
21	पंजाब	राठौर, सेठ, सेठी, नन्दी, कुन्दू
22	राजस्थान	साहू, राठौर, घांची, भोंटी, पंचोली, कोरया, तवनिहां पारसी, सोलंकी
23	सिक्किम	बोराणा, दास
24	तमिलनाडु	चेट्टी, शेट्टी, चोटि्टयार, बनिका, कटियार
25	त्रिपुरा	श्रेष्ठि, जीतालिया
26	उत्तरांचल	माथुर, जायसवाल, ओमर
27	उत्तर प्रदेश	साहू, राठौर, सेठ, प्रसाद, वार्ष्णेय, मथुरिया, महाजन, सिद्दीकी, गुप्ता, ओमर, माथुर
28	पश्चिम बंगाल	साव, साहा, साधु, खान, राव, अहेरा, नाल्या।

क्यों टूट रहे हैं संयुक्त परिवार

समाज में विवाह संयुक्त परिवारों के विघटन का एक प्रमुख कारण बनता जा रहा है। 25–30 वर्ष पहले तक हमारे यहां दादा–दादी, चाचा–चाची सहित पूरा कुनबा एक साथ प्रेमपूर्वक निवास किया करता था, एक दूसरे के सुख–दुख में परस्पर सहयोग करते थे, तीज–त्योहार साथ मनाये जाते थे। आज वक्त पूरी तरह से बदल चुका है। एक तरफ जहां विवाह कुछ परिवारों को खुशियां प्रदान करता है तो दूसरी ओर अनेक परिवारों में अशान्ति और गृहकलह की स्थिति भी उत्पन्न कर देता है। माता–पिता और बेटे–बहू में साथ रहने, सहयोग प्रदान करने की भावना का निरंतन ह्रास हो रहा है। हमें संयुक्त परिवार की अवधारणा समाप्त होने के मूल कारणों को तलाश कर पुनः संयुक्त परिवार की भारतीय संस्कृति को वापस लाने के प्रयास करने होंगे।

समाज में अनेक परिवारों में बेटे के विवाह के साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से परिवार में विघटन की नींव भी पड़ जाती है। कुछ समय बाद यह मामला प्रत्यक्ष रूप से बहू की प्रताड़ना के माध्यम से शुरू हो जाता है। एक बहू माता–पिता को छोड़कर मन में डर और तनाव लिये ससुराल में कदम रखती है। इसके पूर्व कि उसका खुशहाल जीवन आरम्भ हो, ससुराल के लोगों द्वारा दहेज और क्षुद्र बातों को अपने मान–सम्मान से जोड़कर प्रताड़ित किया जाता है, उसके मायके वालों का भी अपमान कर स्वाभिमान को चोट पहुंचायी जाती है। दूसरी तरफ पत्नी का रूख भी अपनी सासुजी के लिये कुछ वैसा ही रहता है। आलोचना और प्रताड़ना के कार्य में सास को अपनी बेटियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। बेटे की समझ में नहीं आता कि ऐसी स्थिति में वह क्या करे, बस किसी तरह समस्या को भविष्य के लिये टाल देता है। अक्सर गृहकलह और तनाव के कारण ही लोग शराब आदि का सेवन करना भी आरम्भ कर देते हैं।

आर्थिक मुद्दा, संयुक्त परिवारों के विघटन की नींव हो गया है। विवाह के पूर्व तो व्यक्ति अकेले होता है। अपनी आमदनी का अधिकांश भाग वह माता–पिता, भाई–बहनों इत्यादि पर अपनी खुशी से खर्च करता है। मँहगाई के दौर में पत्नी पुत्र आदि पर अत्यधिक खर्च हो जाता है। आमदनी सीमित होने के कारण माता–पिता और परिवार पर पहले की अपेक्षा कम खर्च कर पाता है जिसके कारण परिवार के सभी का दृष्टिकोण उसके विरूद्ध हो जाता है।

कुछ मामलों में माता–पिता बच्चों को अंग्रेजी माध्यम की स्कूली शिक्षा में तो लाखों रूपये खर्च कर देते हैं लेकिन अच्छी आदतों का विकास नहीं कर पाते हैं। ससुराल की प्रत्येक बात पर बहू की मां अथवा मायके के सदस्यों के अनावश्यक दखल के कारण भी पारिवारिक विघटन होते देखे जा सकते हैं। संयुक्त परिवारों को विघटन से बचाने के लिए माता–पिता को सूझ–बूझ और दूरदर्शिता से काम लेने की आवश्यकता है। बेटे और बहू को कुछ स्वतंत्रता अवश्य देनी चाहिए। बड़ों के द्वारा गलतियों का समाधान आलोचना और डांट डपट के स्थान पर प्यार से किया जाना चाहिये। घर के समस्त कार्य नियमपूर्वक सभी बहुओं, बेटियों में परस्पर सहयोगपूर्वक होने चाहिए। बहू को भी विवाह के बाद दिल से इस परिवार को अपना परिवार समझना चाहिये क्योंकि एकाकी परिवार में आर्थिक स्थिति और अधिक बिगड़ सकती है। उसे बुजुर्गों को इतना सम्मान देना चाहिये कि वे स्वतः बहू को बेटी मानने के लिये बाध्य हो जायें। सप्ताह में किसी एक दिन सामूहिक रूप से बैठकर समस्याओं पर विचार–विमर्श के द्वारा समस्या का समाधान किया जाना चाहिये। बेटे को विवाह के बाद भी अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने में समर्पित होकर कार्य करना चाहिये। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिये बहुएँ अपनी योग्यतानुसार नौकरी/व्यवसाय करके न केवल अपना अस्तित्व बना सकती हैं, वरन् घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने में सहयोग कर सकती हैं। इसके लिये बड़े बुजुर्गों द्वारा उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। फिजूलखर्ची में कटौती कर जरूरत की चीजों पर पहले ध्यान दिया जाना चाहिये। आपस में विनम्रता और प्यार की भाषा का ही प्रयोग किया जाना चाहिये। अगर इन उपायों को गम्भीरतापूर्वक अपनाया जाये तो न केवल परिवार को विघटित होने से बचाया जा सकता है वरन् विघटित हुए परिवार पुनः संयुक्त हो सकेंगे।

–**शुषमा साहू**,नागपुर

आपका आज का पुरूषार्थ कल का भाग्य है।

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा (रजि0)

Bhartiya Tailik Sahu Rathore Mahasabha (Reg.)

सम्पर्क कार्यालय : शुभम थियेटर बिल्डिंग, कैन्ट रोड़, कैसरबाग, लखनऊ-226001
Office : Shubham Building, Cantt. Road, Kaisarbagh, Lucknow-226001

सहयोगी सदस्यता स्वीकृति-पत्र

सेवा में,

राष्ट्रीय अध्यक्ष

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

शुभम थियेटर बिल्डिंग, कैन्ट रोड

कैसरबाग, लखनऊ-226001

मान्यवर,

मैं साहू राठौर महासभा द्वारा चलाये जा रहे समाजोत्थान कार्यो से प्रभावित हूँ अतः इस महान यज्ञ में अपना सहयोग प्रदान करने हेतु विशिष्ट सदस्यता (3वर्ष हेतु) रू0 500/-, आजीवन सदस्यता (15 वर्ष हेतु) रू0 1500/-, संरक्षक सदस्यता (आजीवन) रू0 2100/-विशेष संरक्षण सदस्यता रूपये 5000/- परम संरक्षक सदस्यता रूपये 10,000/- में से..............................सदस्यता की स्वीकृति प्रदान करें।

नाम श्री/श्रीमती..............................

पिता/पति का नाम..............................

जन्म तिथि..............................वर्तमान व्यवसाय/नौकरी/अन्य सेवा

कार्य.............................. पता (निवास) ....

..............................कार्यालय :..............................पिन कोड..............

फोन..............मोबाइल..............ई-मेल (यदि हो तो)..............................

.... शैक्षिक योग्यता..............................अभिरूचि..............................

..............सदस्यता शुल्क विवरण.............................. ....

..............................(चेक/मनीआर्डर/डी.डी.) पूरा उल्लेख करे।

स्थान : ....

दिनाँक : ....

(नोटः सदस्यता पूर्ण विवरण हेतु फार्म के पीछे अवश्य पढ़े।) सदस्य के हस्ताक्षर

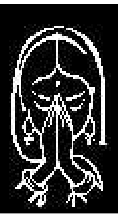

आदरणीय स्वजातीय बन्धु सादर नमस्कार !

मुझे इस सत्यता का भरपूर आभास है कि आप सभी के हृदय में समाजोत्थान की एक ललक व मन में पीड़ादायक एक टीस अवश्य समाई हुई है जिसके कारण आप समाज कार्यों में सहभागी बनकर अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेष्ट हैं। आपके सामने एक कल्पना है, एक सपना है, एक योजना है ताकि सामाजिक उन्नति के बल पर आप अपने बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित कर सकें ताकि भावी पीढ़ी को उत्तरोत्तर उन्नति करने का सुअवसर प्राप्त हो सके।

यह सुखद संयोग है कि भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा' की संस्थापक प्रान्तीय इकाई है, का कार्य विगत 1989 से सतत् रूप से चल रहा है। समिति के कार्य की यह निरन्तरता विशेष महत्वपूर्ण है। यह मेरी अपनी अवधारणा है कि सामाजिक संगठन किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। समाज की उन्नति में तो सभी की सहभागिता, सक्रियता एवं नेतृत्व क्षमता का उपयोग व सहयोग होना चाहिए। हम इस समाज के अभिन्न अंग हैं अतः इस गुरूतर दायित्व के लिए हमें ही आगे आना होगा।

परन्तु यह सत्यता भी निर्विवादित है कि संगठन तंत्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए आर्थिक तंत्र को सबंल रखना भी आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक कदम पर धन की आवश्यकता होती है। इसी को दृष्टिगत रखते हुये सामाजिक बन्धुओं के मध्य सदस्यता अभियान प्रारम्भ करने का निर्णय हुआ है।

सदस्यता सम्बन्धी विस्तृत जानकारी

(1) विशिष्ट सदस्यता- इस सदस्यता हेतु सहयोग राशि 500/-(पाँच सौ मात्र निर्धारित की गई है)। प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्वाचन के समय विशिष्ट सदस्य को वोट देने का अधिकार होगा। रसीद कटने की तिथि से आगामी तीन वर्षों तक यह मान्य रहेगी। संस्था द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका सदस्यता अवधि तक निःशुल्क प्राप्त होती रहेगी।

(2) आजीवन सदस्यता - इस सदस्यता हेतु सहयोग राशि 1500/- (एक हजार पाँच सौ मात्र) निर्धारित की गई है। रसीद कटने की तिथि से आगामी 15 वर्षों तक सदस्यता मान्य रहेगी। ऐसे आदरणीय सदस्य को संस्था द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका सदस्यता अवधि तक निःशुल्क प्राप्त होती रहेगी।

(3) संरक्षक सदस्यता- इस सदस्यता हेतु सहयोग राशि रू0 2100/- (दो हजार एक सौ मात्र) सम्पूर्ण जीवन काल के लिए निर्धारित की गई है। सम्पूर्ण जीवन काल के लिए ऐसे आदरणीय सदस्य का समाजहित में सहयोग चिर स्मरणीय रहेगा। संस्था द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका स्वाभाविक रूप से आजीवन निःशुल्क प्राप्त होती रहेगी।

अन्त में इसी दृढ़ विश्वास के साथ यह अनुरोध पत्र भेजा जा रहा है कि समाजोत्थान के इस यज्ञ में आपकी आर्थिक सहभागिता अवश्य प्राप्त होगी।

विशेष : इस पत्र के साथ सदस्यता स्वीकृति पत्र प्रेषित है।

(4) विशेष संरक्षक सदस्यता- इस सदस्यता हेतु सहयोग राशि रू0 5000/- (पांच हजार रूपये मात्र) ऐसी सदस्यता लेने वालें संगठन के विशेष सम्मानित सदस्य होते है।

(5) परम् संरक्षक सदस्यता- इस सदस्यता हेतु रूपये 10,000/- ऐसी सदस्यता लेने वाले को संगठन के परम् संरक्षक सदस्य होते है।

सादर,

भवदीय

(गांधी रामनरायन साहू)

राष्ट्रीय अध्यक्ष

समाचार पत्रों की सुर्खियाँ

प्रभावी होते हैं इसके अभियान

अधिकारों के प्रति करूंगा जागरूक

साहू राठौर समाज मोदी के साथ : रामनरायण

पहला वोट, अहम वोट

महिलाओं को सुरक्षित माहौल मिले, सशक्तीकरण का प्रयास हो

कु. मनीषा साहू

कड़े दंड से ही बनेगी बात

पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयास

मेरा मत राष्ट्र के नाम

करें मतदान

79.6%

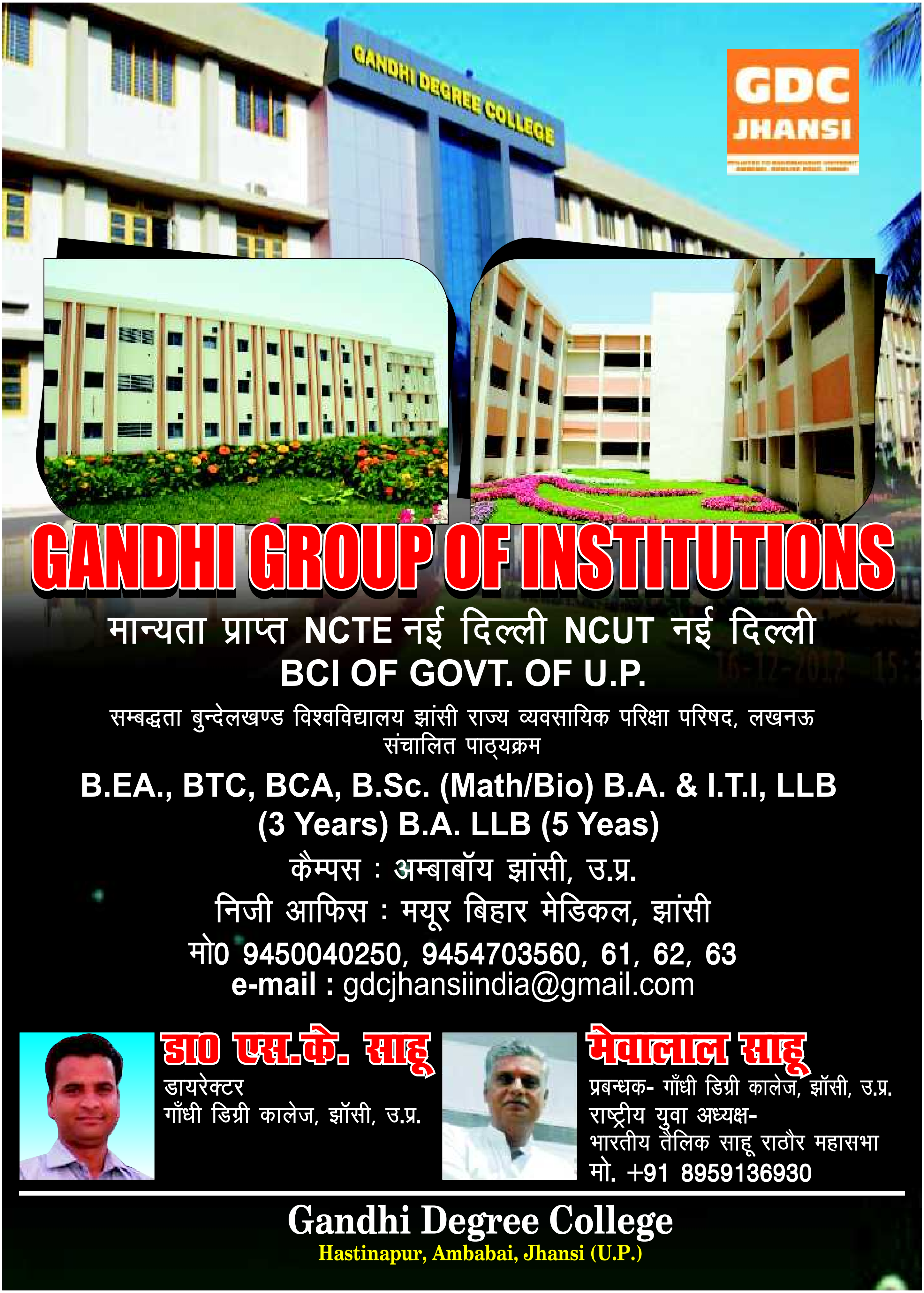
GANDHI DEGREE COLLEGE
GDC
JHANSI
GANDHI GROUP OF INSTITUTIONS
मान्यता प्राप्त NCTE नई दिल्ली NCUT नई दिल्ली
BCI OF GOVT. OF U.P.
सम्बद्धता बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी राज्य व्यवसायिक परिक्षा परिषद, लखनऊ
संचालित पाठ्यक्रम
B.EA., BTC, BCA, B.Sc. (Math/Bio) B.A. & I.T.I, LLB
(3 Years) B.A. LLB (5 Yeas)
कैम्पस : अम्बाबॉय झांसी, उ.प्र.
निजी आफिस : मयूर बिहार मेडिकल, झांसी
मो0 9450040250, 9454703560, 61, 62, 63
e-mail : gdcjhansiindia@gmail.com
डा0 एस.के. साहू
डायरेक्टर
गाँधी डिग्री कालेज, झॉसी, उ.प्र.
मेवालाल साहू
प्रबन्धक- गाँधी डिग्री कालेज, झॉसी, उ.प्र.
राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष-
भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा
मो. +91 8959136930
Gandhi Degree College
Hastinapur, Ambabai, Jhansi (U.P.)

Dr. Umesh Nandlal Shahu

M.A., Phd.

- **National Working President** - Bhartiya Tailik, Shahu, Rathor Mahasabha , Delhi, (Lakhnau Reg.).
- **Life Member** - International Vaish Federation (Reg.) New Delhi.
- **Organiser & Acting President** - Sahu Adarsh Samuhik Vivah & Parichay Sammelan, Nagpur (Reg.).
- **Working President** - "SPANDAN" Mentally Retarded Children's Lalit Kala, Sanskrutik, Samajik & Shaikshanik Sanstha Nagpur (Reg.).
- **Director** - Shahu's Garden High School & Junior College, Nagpur.
- **Director** - Prameshti Mentally Retarded Children's School, Nagpur.
- **Director** - Priyadarshini Indira Gandhi Prathmik School, Nagpur.
- **Director** - Shahid Kakade Prathamik & Madhyamik School, Nagpur.
- **Director** - Shiv Priya Sahakari Bank Ltd. Nagpur.
- **Vice President & CWC Member** - Nagpur City (District). Congress Committee
- **Ex.Co-opt Executive** - Nag Vidarbha Chember Of Commerce (Reg.)

Shahu's™

Group of Business & Education

Director & Proprietors

SMT. SUSHMA UMESH SHAHU
Principal (B.A., B.Ed.)

Ku. RASHMI UMESH SHAHU
Principal (BCA, MBA, Bed., Interior Designer)

RAHUL UMESH SHAHU
Director (B. Com., M.B.A.)

SMT. PRIYA RAHUL SHAHU
Director (BCCA, Graduate in Fashion Designer)

SUBHASH N. SHAHU
Proprietor

SMT. SUJATA SUBHASH SHAHU
Director (B.A.)

SATISH N. SHAHU
Proprietor

SMT. ANAMIKA SATISH SHAHU
Principal (MSc. Bed.)

Shahu's Garden High School & Jr. College. Shahu Garden, Manewada Road, Nagpur.

Shahu's Garden Pre-Primary, Primary,Middle & High School, Shahu Nagar, Nagpur.

Priyadarshini Indira Gandhi Marathi PrathamikSchool, Shahu Nagar, Nagpur.

Prameshti Mentally Retarded Children's School, Shahu Layout, Hudkeshwar Road, Nagpur.

Shahu's Garden Funskool. Mahatma Fuley Nagar, Manewada Road, Nagpur.

Shahu's Garden Funskool. Shahu Nagar, Besa Road, Nagpur.

Shahu's Vrundavan Lawn & Hall Shahu Nagar, Manewada - Besa Road, Nagpur

Shahu's VANDAN Sanitary Shopee Shahu Nagar, Manewada-Besa Road, Nagpur.

Firm

- ★ M/s. Shahu Traders - Grain, Poha , Murmura Wholesale Merchant Anaj Bazar, Itwari, and Kalamna, APMC Market, Nagpur.
- ★ Shahu Housing Fainance & Development Company Pvt. Ltd.
- ★ Shahu's Builders & Developers, Nagpur.
- ★ Shahu's Vrundavan Lawn & Hall, Nagpur.
- ★ Shahu's Vandan Sanitary Shopee, Nagpur.
- ★ Shahu's Vrundavan Steel & Cement Traders, Nagpur.
- ★ Shahu's Shree Garden Nursery, Nagpur.

Developed Layouts & Apartment

- Shahu Nagar, Manewada, Besa Road, Nagpur.
- Shahu Vihar - 1 Besa, Nagpur.
- Shahu Vihar - 2 Besa, Nagpur.
- Shahu-Banode Nagar 3 Besa, Nagpur.
- Shahu Layout - 1 Hudkeshwar Road, Nagpur.
- Shahu Layout - 2 Hudkeshwar Road, Nagpur.
- Shahu's Shivanand Apartment, Hanuman Nagar, Nagpur.
- Vaishnav Apartment, Ayodhya Nagar, Nagpur.

Resi. : 480, Shahu Bhavan, Opp. State Bank of India, Medical College Sq., Nagpur- 9 (M.H.) Phone : 0712-2747968, 2703322

Off. : Shahu Garden, Manewada Cement Road, Nagpur-27.(M.H.)

Office : 0712- 2751151, 2760910, 2682064.

Fax : 0712- 2704103.

Mobile : 09422114433, 09373102064, 09822226355, 09823147968.